कानपुर, शनिवार, 4 अप्रैल, 2026
वर्षः 03, अंकः 85, पृष्ठः 8+4

सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com
Website: www.swarajindianews.com

स्वराज इंडिया

साप्ताहिक समाचार पत्र

इनसाइड ईरान अमेरिका टकराव खतरनाक मोड़ पर...>Pg12

100 करोड़ के खेल का मास्टरमाइंड ...>Pg03

मूल्यः ₹

25 हजार का इनामी पुलिस की गिरफ्त में आया

मौत की बोतलें बेचता था!

कोडीन युक्त प्रतिबंधित दवाओं की लाखों बोतलों का खेल उजागर, फर्जी फर्मों के जरिए कई राज्यों में फैला था नेटवर्क

मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। मानव जीवन से खिलवाड़ करने वाले एक बड़े ड्रग्स नेटवर्क पर क्राइम ब्रांच ने निर्णायक प्रहार करते हुए 25 हजार रुपये के इनामी वांछित आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। यह गिरफ्तारी सिर्फ एक अपराधी की पकड़ नहीं, बल्कि उन लाखों जिंदगियों को बचाने की दिशा में बड़ा कदम है, जिन्हें कफ सिरप के नाम पर नशे की गिरफ्त में धकेला जा रहा था।

पुलिस कमिश्नर रघुबीर लाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में खुलासा करते हुए बताया कि गिरफ्तार आरोपी शिवम अग्रवाल लंबे समय से फरार चल रहा था और इस अवैध नेटवर्क का अहम कड़ी था। उसकी गिरफ्तारी के साथ ही करोड़ों के उस काले कारोबार की परतें खुल गईं, जिसमें कोडीन युक्त कफ सिरप का बड़े पैमाने पर अवैध व्यापार किया जा रहा था। जांच में सामने आया कि आरोपी फर्जी फर्मों और नकली बिलों के जरिए प्रतिबंधित दवाओं की सप्लाई करता था। इस पूरे नेटवर्क में 47 फर्मों का इस्तेमाल किया गया, जिनमें से 21 पूरी तरह फर्जी निकलीं। इन फर्मों के जरिए लाखों बोतलों की खरीद-फरोख्त की गई, जिसमें एक बार में 89,600 बोतलों की खरीद का चौंकाने वाला मामला सामने आया।

पुलिस के मुताबिक, इस संगठित नेटवर्क के जरिए करीब 42 करोड़ रुपये का अवैध कारोबार किया गया। यह नेटवर्क सिर्फ एक जिले या राज्य तक सीमित नहीं था, बल्कि कई राज्यों में सक्रिय था, जिससे इसकी गंभीरता और व्यापकता का अंदाजा लगाया जा सकता है। गौरतलब है कि इस मामले में आरोपी का पिता विनोद अग्रवाल पहले से ही जेल में बंद है और पुलिस ने पूर्व में इस गिरोह से जुड़ी करोड़ों की संपत्तियां भी जब्त की थीं। अब इनामी आरोपी की गिरफ्तारी के बाद जांच एजेंसियों को इस नेटवर्क की और गहराई तक पहुंचने की उम्मीद है।

यह मामला सिर्फ आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि समाज के स्वास्थ्य और भविष्य के साथ सीधा खिलवाड़ है। कोडीन युक्त कफ सिरप का दुरुपयोग नशे के रूप में किया जाता है, जिससे खासकर युवा वर्ग इसकी चपेट में आकर बर्बादी की ओर बढ़ता है। यह गिरफ्तारी न केवल कानून के शिकंजे की मजबूती दिखाती है, बल्कि यह भी बताती है कि अपराध चाहे कितना भी संगठित क्यों न हो, अंततः कानून के हाथ उससे लंबे होते हैं। अब उम्मीद है कि इस कार्रवाई के बाद ऐसे नेटवर्क पर और सख्त लगाम लगेगी और "दवा के नाम पर जहर" बेचने वालों पर नकेल कसी जाएगी।

कानून की नजर में कितना बड़ा अपराध?

कोडीन युक्त दवाएं NDPS (नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस) एक्ट के तहत नियंत्रित श्रेणी में आती हैं। इनकी अवैध बिक्री या तस्करी पर कड़ी सजा का प्रावधान है– जिसमें लंबी जेल, भारी जुर्माना और संपत्ति जब्ती शामिल है। इस केस में 42 करोड़ का कारोबार सामने आना बताता है कि यह अपराध बेहद संगठित और गंभीर स्तर का है।

- 25 हजार रुपये का इनामी मुख्य आरोपी गिरफ्तार
- 42 करोड़ रुपये के अवैध कारोबार का खुलासा
- 47 फर्मों में से 21 फर्जी पाई गईं
- 89,600 बोतलों की एकमुश्त खरीद
- कई राज्यों में फैला सप्लाई नेटवर्क
- आरोपी का पिता पहले से जेल में बंद
- करोड़ों की संपत्ति पहले ही जब्त

केस की परत-दर परत कहानी

- **शुरुआतः** कोडीन युक्त कफ सिरप की अवैध सप्लाई, फर्जी फर्मों का गठन
- **विस्तारः** नेटवर्क कई राज्यों तक फैला, बड़े पैमाने पर कारोबार शुरू
- **उछालः** लाखों बोतलों की खरीद-फरोख्त, 42 करोड़ का अवैध टर्नओवर
- **संदेहः** पुलिस को फर्जी बिलिंग और संदिग्ध लेन-देन की जानकारी
- **जांचः** 47 फर्म चिन्हित, 21 पूरी तरह फर्जी निकलीं
- **कार्रवाईः** करोड़ों की संपत्तियों की जब्ती, पिता की गिरफ्तारी
- **इनाम घोषितः** मुख्य आरोपी शिवम अग्रवाल फरार, 25 हजार का इनाम
- **गिरफ्तारीः** क्राइम ब्रांच ने इनामी आरोपी को दबोचा
- **खुलासाः** पुलिस कमिश्नर ने पूरे नेटवर्क का किया पर्दाफाश

दवा या नशा? कैसे बनता है कफ सिरप 'जहर'

कोडीन युक्त कफ सिरप मूल रूप से खांसी के इलाज के लिए बनाई जाती है, लेकिन जब इसका दुरुपयोग होता है तो यही दवा नशे का खतरनाक साधन बन जाती है। अधिक मात्रा में सेवन करने पर यह शरीर को सुस्त कर देती है और धीरे-धीरे इसकी लत लग जाती है। युवाओं में इसका ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है, क्योंकि यह आसानी से 'दवा' के नाम पर उपलब्ध हो जाती है।

फर्जी फर्मों का खेल–कैसे चलता है पूरा नेटवर्क

इस मामले में सामने आया कि आरोपी ने 47 फर्मों का जाल बिछाया, जिनमें 21 पूरी तरह फर्जी थीं। ये फर्में सिर्फ कागजों पर मौजूद थीं, जिनके जरिए नकली बिल बनाए जाते थे। असली दवा कंपनियों के नाम का इस्तेमाल कर सप्लाई चेन को वैध दिखाया जाता था। इसी सिस्टम के जरिए लाखों बोतलें बिना शक के एक राज्य से दूसरे राज्य भेजी जाती थीं।

समाज पर असर, सबसे ज्यादा खतरे में कौन?

इस तरह के अवैध कारोबार का सबसे बड़ा असर युवाओं और गरीब तबके पर पड़ता है। सस्ती "नशे की दवा" के रूप में यह तेजी से फैलती है और लत लगने के बाद व्यक्ति अपराध, बीमारी और सामाजिक पतन की ओर बढ़ता है। कई मामलों में यह मानसिक स्वास्थ्य और जीवन दोनों के लिए घातक साबित होती है।

स्लीपर मॉड्यूल का पर्दाफाश, सीरियल ब्लास्ट की साजिश नाकाम

यूपी एटीएस का बड़ा एक्शन

स्वराज इंडिया ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश एटीएस ने एक बड़ी आतंकी साजिश को समय रहते नाकाम करते हुए स्लीपर मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। बिजनौर में आगजनी की घटना की जांच से शुरू हुई कार्रवाई ने लखनऊ तक फैले एक संगठित नेटवर्क का खुलासा किया, जहां से चार संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया गया है। प्रारंभिक जांच और पूछताछ में इनका संबंध पाकिस्तान में बैठे आतंकी हैंडलर अबू बकर से जुड़ा पाया गया है, जो सोशल मीडिया और एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म के जरिए इन्हें निर्देश दे रहा था।

- लखनऊ से चार संदिग्ध गिरफ्तार, पाकिस्तानी हैंडलर अबू बकर से जुड़े तार
- शॉपिंग मॉल, रेलवे और भीड़भाड़ वाले इलाकों को बनाना था निशाना

एटीएस अधिकारियों के मुताबिक, यह मॉड्यूल लंबे समय से स्लीपर सेल की तरह सक्रिय था और देश में बड़े स्तर पर आतंकी हमलों की तैयारी कर रहा था। आरोपियों के मोबाइल फोन और डिजिटल डिवाइस की फोरेंसिक जांच में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। जांच में पाया गया कि वे कट्टरपंथी विचारधारा से जुड़े वीडियो और सामग्री नियमित रूप से प्राप्त कर रहे थे, जिससे उन्हें भड़काने और हमलों के लिए प्रेरित करने की कोशिश की जा रही थी।

साकिब उर्फ डेविल

अरबाब

लोकेश उर्फ बाबू

विकाश गहलावत

फोरेंसिक टीम ने डिलीट किए गए डेटा को भी रिकवर किया है, जिसमें देश के महत्वपूर्ण संस्थानों, रेलवे नेटवर्क, भीड़भाड़ वाले बाजारों और प्रमुख इमारतों से जुड़ी संवेदनशील जानकारी शामिल है। इससे साफ संकेत मिलता है कि आरोपियों की योजना सुनियोजित और बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाने की थी।

पूछताछ में यह भी सामने आया है कि आरोपी टाइम बम और केमिकल बम बनाने की ट्रेनिंग ले रहे थे। उनकी साजिश देश के विभिन्न शहरों में मॉल, रेलवे स्टेशन और सरकारी इमारतों को निशाना बनाकर सीरियल ब्लास्ट करने की थी। इसके अलावा रेलवे सिग्नल सिस्टम को क्षतिग्रस्त कर बड़े रेल हादसे कराने की भी योजना थी, जिससे व्यापक जनहानि हो सकती थी।

एटीएस ने इस मामले में अन्य संदिग्धों की तलाश तेज कर दी है। खुफिया एजेंसियों के साथ समन्वय कर पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। सुरक्षा एजेंसियां अब यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि इस मॉड्यूल को फंडिंग और लॉजिस्टिक सपोर्ट कहां से मिल रहा था।

विशेषज्ञों के अनुसार, हाल के वर्षों में स्लीपर सेल के जरिए आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने की रणनीति में तेजी आई है, जहां स्थानीय युवाओं को डिजिटल माध्यम से कट्टरपंथ की ओर धकेला जाता है। ऐसे मामलों में समय रहते कार्रवाई बेहद अहम होती है, ताकि बड़े हमलों को रोका जा सके। यह कार्रवाई न केवल एक बड़ी साजिश को विफल करने में सफल रही है, बल्कि यह भी दिखाती है कि सुरक्षा एजेंसियां अब डिजिटल और जमीनी दोनों स्तरों पर सक्रिय होकर ऐसे खतरों पर नजर बनाए हुए हैं।

नौकरी का झांसा, जिस्मफरोशी का जाल

कानपुर में फैले संगठित सेक्स रैकेट का बड़ा खुलासा

» बैंगलोर में नौकरी दिलाने का लालच देकर युवती को कानपुर लाया गया

» पुलिस ने मुख्य आरोपी को दबोचा, 20 से अधिक होटलों में चल रहे रैकेट की परतें खुलीं

» मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। शहर में नौकरी का झांसा देकर युवतियों को देह व्यापार में धकेलने वाले संगठित गिरोह का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। इस मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी रोहित को गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता की सूचना पर सामने आए इस पूरे प्रकरण ने न केवल शहर में सक्रिय अवैध देह व्यापार के नेटवर्क की पोल खोली है, बल्कि यह भी दिखाया है कि किस तरह मासूम युवतियों को सुनियोजित तरीके से जाल में फंसाया जा रहा है। पुलिस के अनुसार, आरोपी रोहित युवतियों को अच्छी नौकरी दिलाने का लालच देकर अपने जाल में फंसाता था। इसी कड़ी में उसने पीड़िता को बैंगलोर में रोजगार दिलाने का भरोसा दिया। बेहतर भविष्य की उम्मीद में युवती उसके झांसे में आ गई। आरोपी उसे कानपुर लेकर आया, जहां उसके साथ धोखा करते हुए उसे जबरन देह व्यापार में धकेल दिया गया।

बताया जा रहा है कि शुरुआत में पीड़िता ने इसका विरोध किया, लेकिन आरोपी ने उसे धमकाकर और मानसिक दबाव बनाकर इस अवैध काम में शामिल होने के लिए मजबूर कर दिया। उसे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं दिया गया और लगातार शोषण का शिकार बनाया गया। हालांकि, किसी तरह मौका पाकर पीड़िता ने साहस जुटाया और पुलिस तक अपनी बात पहुंचाई।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

पीड़िता की सूचना मिलते ही पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी रोहित को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद जब उससे सख्ती से पूछताछ की गई, तो उसने कई चौंकाने वाले खुलासे किए। आरोपी ने कबूल किया कि वह अकेला नहीं है, बल्कि एक बड़े नेटवर्क का हिस्सा है, जो कानपुर समेत कई शहरों में सक्रिय है।

पूछताछ में यह भी सामने आया कि शहर के करीब 20 होटल इस रैकेट के लिए इस्तेमाल किए जा रहे थे। इन होटलों में ग्राहकों को बुलाकर देह व्यापार कराया जाता था। मामले की गंभीरता को देखते हुए एडीसीपी शिवा सिंह, सुमित रामटेके और सुमेध जाधव के नेतृत्व में पुलिस टीम ने शहर के कई होटलों में एक साथ छापेमारी की।

छापेमारी के दौरान पुलिस ने होटलों के रजिस्टर, पहचान पत्रों की एंट्री और सीसीटीवी फुटेज को खंगाला। जांच के दौरान कई संदिग्ध गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं, जिनके आधार पर पुलिस अब होटल संचालकों की भूमिका की भी जांच कर रही है। यह भी देखा जा रहा है कि क्या होटल प्रबंधन इस अवैध धंधे में सीधे तौर पर शामिल था या फिर लापरवाही बरती जा रही थी।

जांच में एक और बड़ा खुलासा यह हुआ कि यह पूरा रैकेट डिजिटल माध्यमों के जरिए संचालित किया जा रहा था। आरोपी व्हाट्सएप के जरिए ग्राहकों को लड़कियों की तस्वीरें भेजता था। ग्राहक अपनी पसंद के अनुसार युवती का चयन करते थे और फिर 4 से 5 हजार रुपये तक में सौदा तय होता था। इसके बाद तय स्थान–अक्सर होटल–पर इस अवैध गतिविधि को अंजाम दिया जाता था।

पुलिस को यह भी जानकारी मिली है कि इस नेटवर्क का दायरा केवल कानपुर तक सीमित नहीं है। कोलकाता समेत कई अन्य राज्यों से युवतियों को लाकर इस धंधे में लगाया जाता था। इससे यह साफ हो गया है कि यह एक अंतरराज्यीय गिरोह है, जो सुनियोजित तरीके से मानव तस्करी और देह व्यापार जैसे गंभीर अपराधों को अंजाम दे रहा है।एडीसीपी के अनुसार, आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं में एफआईआर दर्ज कर ली गई है और अब इस पूरे नेटवर्क की गहराई से जांच की जा रही है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि इस गिरोह के अन्य सदस्य कौन हैं, किन-किन शहरों में इसका नेटवर्क फैला है और इसमें कौन-कौन से लोग सहयोग कर रहे हैं।पुलिस टीम अब इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों को भी खंगाल रही है। मोबाइल फोन, चैट हिस्ट्री और कॉल डिटेल्स के जरिए नेटवर्क के अन्य सदस्यों तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है। साथ ही जिन होटलों के नाम सामने आए हैं, उनके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की तैयारी की जा रही है।

- नौकरी का झांसा देकर युवती को बैंगलोर से कानपुर लाया गया
- मुख्य आरोपी रोहित गिरफ्तार, पूछताछ में बड़े रैकेट का खुलासा
- शहर के करीब 20 होटल इस नेटवर्क के इस्तेमाल में
- एडीसीपी स्तर के अधिकारियों के नेतृत्व में कई होटलों पर छापेमारी
- होटल रजिस्टर और सीसीटीवी फुटेज की गहन जांच
- व्हाट्सएप के जरिए ग्राहकों को भेजी जाती थीं लड़कियों की तस्वीरें
- 4–5 हजार रुपये में तय होता था सौदाड्ड
- कोलकाता समेत कई राज्यों से युवतियों को लाकर कराया जाता था देह व्यापार
- मानव तस्करी और संगठित अपराध के एंगल से जांच जारी
- इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों के जरिए नेटवर्क के अन्य सदस्यों की तलाश तेज

इस घटना ने समाज के सामने एक गंभीर सवाल खड़ा कर दिया है कि किस तरह बेरोजगारी और बेहतर जीवन की चाह में युवतियां अपराधियों के जाल में फंस जाती हैं। जरूरत इस बात की है कि ऐसे मामलों में जागरूकता बढ़ाई जाए और नौकरी के नाम पर मिलने वाले संदिग्ध प्रस्तावों से सावधान रहा जाए। पुलिस ने आम लोगों से अपील की है कि यदि कहीं भी इस तरह की गतिविधियों की जानकारी मिले, तो तुरंत पुलिस को सूचित करें। समय रहते दी गई सूचना न केवल किसी की जिंदगी बचा सकती है, बल्कि ऐसे संगठित अपराधों पर भी प्रभावी रोक लगा सकती है।

उर्सला अस्पताल में कम संसाधनों के बीच बड़ी कामयाबी

आयुष्मान योजना से दोबारा चलने लगा मरीज

» जटिल कूल्हा प्रत्यारोपण कर डॉक्टरों ने रचा मिसाल

» एक साल से इंतजार कर रहे मरीज को मिली नई जिंदगी

» सरकारी अस्पतालों में बढ़ती भरोसे की उम्मीद

» मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। कानपुर के सरकारी स्वास्थ्य तंत्र के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि सामने आई है। उर्सुला अस्पताल में आयुष्मान भारत योजना के तहत एक जटिल कूल्हा प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक कर डॉक्टरों की टीम ने न केवल चिकित्सा कौशल का प्रदर्शन किया, बल्कि सीमित संसाधनों में बेहतर इलाज की मिसाल भी पेश की है।

मरीज आदित्य कमल (37), जो लंबे समय से दूसरे कूल्हे की गंभीर समस्या से जूझ रहे थे, अब सफल ऑपरेशन के बाद राहत महसूस कर रहे हैं। खास बात यह है कि इससे पहले उनके एक कूल्हे का ऑपरेशन भी इसी अस्पताल में आयुष्मान योजना के अंतर्गत किया जा चुका था। दूसरे ऑपरेशन के लिए उन्हें लगभग एक वर्ष तक इंतजार करना पड़ा, लेकिन अंततः यह जटिल प्रक्रिया सफल रही।

वरिष्ठ हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. आशीष मिश्रा के नेतृत्व में किए गए इस ऑपरेशन में निश्चेतक टीम ने अहम भूमिका निभाई। डॉ. डी.एस. चौहान, डॉ. प्रज्वल जायसवाल, अभिनव और शिवम गुप्ता ने पूरे ऑपरेशन के दौरान सटीक समन्वय बनाए रखा। वहीं सिस्टर इंचार्ज मधु मिश्रा की देखरेख में पूरी प्रक्रिया सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न हुई।

अस्पताल के अधीक्षक डॉ. शैलेंद्र तिवारी ने इस सफलता को टीमवर्क का परिणाम बताते हुए सभी सदस्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि दर्शाती है कि सरकारी अस्पताल भी जटिल सर्जरी करने में सक्षम हैं, बशर्ते समर्पण और सही नेतृत्व हो। यह मामला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आयुष्मान योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को महंगे उपचार की सुविधा मिल रही है। निजी अस्पतालों में लाखों रुपये खर्च होने वाले ऐसे ऑपरेशन अब सरकारी अस्पतालों में भी संभव हो रहे हैं, जिससे आम जनता का भरोसा मजबूत हो रहा है। इस सफलता ने यह साबित कर दिया है कि संसाधनों की कमी के बावजूद यदि इच्छाशक्ति और विशेषज्ञता हो, तो सरकारी संस्थान भी चिकित्सा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं।

कानपुर के सरकारी अस्पतालों में ऐसी उपलब्धिया

- 2019- हैलट अस्पताल में पहली बार आयुष्मान योजना के तहत जटिल ऑर्थोपेडिक सर्जरी की शुरुआत
- 2021-उर्सुला अस्पताल में मुफ्त घुटना प्रत्यारोपण के सफल केस सामने आए
- 2023-कार्डियक सर्जरी की सीमित सुविधाओं के बावजूद जटिल ऑपरेशन किए गए
- 2025- आयुष्मान योजना के तहत बड़े पैमाने पर गंभीर सर्जरी की संख्या में बढ़ोतरी
- 2026-उर्सला अस्पताल में दोहरा कूल्हा प्रत्यारोपण सफल, नई मिसाल स्थापित

कानपुर किडनी कांड का 'गुप्त डॉक्टर' बेनकाब

ओटी टेक्नीशियन निकला 100 करोड़ के खेल का मास्टरमाइंड

स्वराज इंडिया फालोअप

मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। शहर को झकझोर देने वाले किडनी कांड में जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे इस संगठित अपराध की परतें खुलती जा रही हैं। ताजा खुलासे में सामने आया है कि पूरे अवैध किडनी ट्रांसप्लांट रैकेट का मास्टरमाइंड कोई नामी सर्जन नहीं, बल्कि एक ओटी (ऑपरेशन थिएटर) टेक्नीशियन है, जो खुद को डॉक्टर बताकर इस खेल को अंजाम दे रहा था। डॉ. रोहित नाम से पहचाना जा रहा यह शख्स गाजियाबाद के इंद्रापुरम का रहने वाला है और लंबे समय से अवैध ट्रांसप्लांट नेटवर्क संचालित कर रहा था।

जांच एजेंसियों के अनुसार, रोहित की भूमिका बेहद रणनीतिक थी। वह पूरे ऑपरेशन की 'सेटिंग' करता था–मरीज और डोनर की व्यवस्था, फर्जी कागजात तैयार कराना, अस्पतालों में संपर्क बनाना और पैसों का लेनदेन सुनिश्चित करना। वहीं, ओटी मैनेजर मुदस्सर अली सिद्दीकी असली ऑपरेशन को अंजाम देता था। यह पूरा नेटवर्क बेहद पेशेवर तरीके से काम करता था, जिसमें हर सदस्य की भूमिका तय थी।

चार दिन तक पुलिस को चकमा देने वाला रोहित आखिरकार एक छोटी सी चूक से पकड़ में आ गया। पुलिस को उसका आधार कार्ड मिला, जिसके जरिए उसकी पहचान और पता ट्रेस किया गया। गाजियाबाद के न्यायखंड-1, इंद्रापुरम स्थित उसके ठिकाने पर छापा भी मारा गया, लेकिन वह फरार मिला। उसका मोबाइल स्विच ऑफ है, जिससे लोकेशन ट्रैक करने में दिक्कत आ रही है। पुलिस अब उसके संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही है।

जांच में यह भी सामने आया है कि रोहित का नेटवर्क सिर्फ कानपुर तक सीमित नहीं था, बल्कि गाजियाबाद और नोएडा में भी सक्रिय था। अनुमान है कि इस रैकेट ने अब तक 100 करोड़ रुपये से ज्यादा की अवैध कमाई की है। मरीजों को सस्ते में किडनी ट्रांसप्लांट का झांसा देकर फंसाया जाता था, जबकि डोनर्स को भी लालच या मजबूरी में इस जाल में लाया जाता था।

इस रैकेट का एक अहम सदस्य साहिल भी है, जो मरीजों से पैसे लेकर फरार हो जाता था। वह खुद को एजेंट बताकर लोगों को भरोसे में लेता और फिर उन्हें इस अवैध नेटवर्क से जोड़ देता था। पुलिस उसकी भी तलाश में जुटी है। अब तक इस मामले में ओटी मैनेजर राजेश कुमार और असिस्टेंट कुलदीप सिंह राघव समेत 8 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। पूछताछ में दोनों ने कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन के तुरंत बाद पूरी टीम शहर छोड़ देती थी, जिससे पुलिस को सुराग न मिल सके।

पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम अब इस पूरे नेटवर्क को जड़ से खत्म करने के लिए जुटी है। कई अस्पतालों और डायग्नोस्टिक सेंटरों की भी जांच की जा रही है, जहां इस तरह के अवैध ट्रांसप्लांट किए जाने की आशंका है। अधिकारियों का दावा है कि जल्द ही इस मामले में और बड़े नाम सामने आ सकते हैं। यह किडनी कांड न सिर्फ एक आपराधिक नेटवर्क का खुलासा है, बल्कि स्वास्थ्य व्यवस्था में छिपी खामियों की भी बड़ी चेतावनी है। अब सबकी नजर पुलिस की अगली कार्रवाई और इस नेटवर्क के पूरी तरह ध्वस्त होने पर टिकी है।

अब तक क्या हुआ

- **दिन 1** कानपुर में संदिग्ध किडनी ट्रांसप्लांट की सूचना पर जांच शुरू
- **दिन 2** ओटी मैनेजर और असिस्टेंट की गिरफ्तारी, शुरुआती पूछताछ में रैकेट का खुलासा
- **दिन 3** मास्टरमाइंड 'डॉ. रोहित' का नाम सामने आया, फरारी शुरू
- **दिन 4** आधार कार्ड से पहचान, गाजियाबाद में छापा लेकिन आरोपी फरार
- **दिन 5** नेटवर्क के नोएडा कनेक्शन का खुलासा, अन्य आरोपियों की तलाश तेज

- आधार कार्ड से खुली पहचान, गाजियाबाद-नोएडा तक फैला नेटवर्क
- फरार सरगना की तलाश में कई राज्यों में पुलिस की छापेमारी तेज– थाना सामने फिर भी कार्रवाई शून्य; जिम्मेदारों की भूमिका पर उठे सवाल

कैसे चलता था किडनी रैकेट?

इस रैकेट का संचालन पूरी तरह कॉर्पोरेट स्टाइल में होता था। एक टीम डोनर और मरीज खोजती, दूसरी फर्जी दस्तावेज तैयार करती और तीसरी टीम ऑपरेशन को अंजाम देती। हर ट्रांसप्लांट पर लाखों रुपये का खेल होता था, जिसमें अलग-अलग हिस्सेदारी तय थी।

सिस्टम की कहां हुई चूक?

इतने बड़े पैमाने पर अवैध ट्रांसप्लांट होना स्वास्थ्य विभाग और निगरानी तंत्र की बड़ी विफलता को दर्शाता है। अस्पतालों की जांच, डोनर-रिसीवर की वैधता और कागजी प्रक्रिया की निगरानी में गंभीर खामियां सामने आई हैं।

मरीजों और डोनर्स के लिए खतरा

अवैध ट्रांसप्लांट में न तो उचित मेडिकल प्रोटोकॉल अपनाए जाते हैं और न ही बाद की देखभाल सुनिश्चित होती है। इससे मरीजों की जान पर खतरा मंडराता है, वहीं डोनर्स का शोषण होता है। कई मामलों में संक्रमण और मौत तक के खतरे बढ़ जाते हैं।

फैक्ट्री में भीषण आग से मचा हड़कंप दमकल की तत्परता से टला बड़ा हादसा

भीमसेन थाना क्षेत्र के सचेडी में लगी आग, तीन दमकल गाड़ियों ने पाया काबू

समय रहते कार्रवाई से नहीं हुई कोई जनहानि, बड़ा नुकसान टला

» प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर नगर के भीमसेन थाना क्षेत्र अंतर्गत सचेडी चौकी के कला का पुरवा इलाके में शनिवार दोपहर एक फैक्ट्री में अचानक आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही अग्निशमन विभाग हरकत में आया और तत्काल राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। समय रहते दमकल विभाग की सक्रियता के चलते एक बड़ा हादसा टल गया और किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक 04 अप्रैल 2026 को दोपहर 12:26 बजे फैक्ट्री में आग लगने की सूचना कंट्रोल रूम को मिली। सूचना मिलते ही मुख्य अग्निशमन अधिकारी कानपुर नगर के निर्देशन में फायर स्टेशन पनकी और फजलगंज से कुल तीन दमकल गाड़ियों को तत्काल घटनास्थल के लिए रवाना किया गया।

दमकल कर्मियों ने मौके पर पहुंचते ही स्थिति का जायजा लिया और बिना समय गंवाए आग बुझाने का अभियान शुरू कर दिया। आग तेजी से फैल रही थी, जिससे आसपास के क्षेत्र में दहशत का माहौल बन गया था। हालांकि, अग्निशमन टीम की सूझबूझ और अथक प्रयासों के चलते आग को जल्द ही काबू में कर लिया गया और उसे पूरी तरह बुझा दिया गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आग लगने के बाद फैक्ट्री परिसर में धुआं फैल गया था, जिससे कर्मचारियों में भगदड़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी। लेकिन समय रहते सभी लोग सुरक्षित बाहर निकल गए, जिससे किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई।

अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि प्राथमिक जांच में आग लगने के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल सका है। हालांकि शॉर्ट सर्किट की आशंका जताई जा रही है।

विस्तृत जांच के बाद ही वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा।

इस घटना में भले ही कोई जनहानि नहीं हुई, लेकिन फैक्ट्री में रखे सामान को नुकसान पहुंचने की संभावना है।

नुकसान का आकलन किया जा रहा है। स्थानीय प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे औद्योगिक इकाइयों में सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखें और अग्नि सुरक्षा उपकरणों को हमेशा कार्यशील स्थिति में रखें, ताकि इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

गुड फ्राईडे पर चर्चो में की गई विशेष आराधना

वेदी तक फादर ले गए यीशु का क्रूस, सुनाई 7 वाणियां

» प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। गुड फ्राइडे को प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की याद में कानपुर के विभिन्न चर्चों में विशेष आराधना आयोजित की गई। फादरों की टीम ने प्रभु यीशु मसीह का क्रूस उठाकर भक्तिभाव से वेदी तक पहुंचाया। इस दौरान यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर कही गई सात वाणियां भक्तों को सुनाई गईं।

भक्तों ने क्रूस चुम्बन कर यीशु के कष्टों को याद किया। शुक्रवार को गुड फ्राइडे के अवसर पर संत फ्रांसिस जेवियर्स चर्च, अशोक नगर में युवाओं द्वारा मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने का नाटकीय रूपांतरण प्रस्तुत किया गया। प्रभु यीशु मसीह के क्रूस-मरण तथा क्रूस की उपासना बड़े भक्तिभाव से मनाई गई। आराधना की शुरुआत गीत जो क्रूस पर कुर्बान है, वो मेरा मसीहा है से हुई।

फादर के.के. एंटोनी, फादर जोसेफ सहायनाथन और फादर एंटोनी स्वामी ने यीशु मसीह का क्रूस उठाकर वेदी तक ले जाया। इस दिन को प्रार्थना, उपवास और त्याग का दिन माना जाता है, क्योंकि इसी दिन प्रभु यीशु सूली (क्रूस) पर चढ़ाए गए थे।

क्रूस उपासना के बाद मुख्य वक्ता फादर जोसेफ सहायनाथन ने कहा, पुण्य शुक्रवार है। आज ही के दिन प्रभु ईसा मसीह ने सारी मानव जाति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन बलिदान कर दिया। प्रभु यीशु दीन-दुखियों और दरिद्रों के लिए आवाज बने और सबकी मुक्ति के लिए उन्होंने स्वयं को समर्पित किया। उनके आत्म-त्याग के कारण ही हम पाप से मुक्त हुए हैं। आज हम यीशु के क्रूस-मरण की याद करते हैं, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हुआ है।

इस अवसर पर अजय बैनेडिक्ट, नोएल जॉर्ज, अनिल मसीह, वीनू जैकब, बाबा मेंडिस, आशीष दानी, सिस्टर रंजना, सिस्टर रिया तथा फातिमा कान्वेंट स्कूल, मरियमपुर स्कूल, मरिया भवन, नरियमपुर अस्पताल की धर्म बहनों सहित बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

अन्य चर्चों में हुआ आयोजन

द गुड शेपर्ड चर्च, गूबा गार्डन, कल्याणपुर में भी गुड फ्राइडे पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। भक्तों ने यीशु मसीह के बलिदान को याद किया। बिशप पंकज राज मलिक ने यीशु द्वारा क्रूस पर कही गई सात वाणियां भक्तों को सुनाईं। इस मौके पर अनुपमा मलिक, शीना मलिक, पादरी सागर मैसी, अनुराज मलिक, पादरी सत्येंद्र श्रीवास्तव, श्रेयराज, अभिमन्यु, सौरभ राज आदि उपस्थित रहे।न्यू इंडिया चर्च ऑफ गॉड, गोविंद नगर में पादरी जितेंद्र सिंह ने विशेष आराधना की और यीशु मसीह के संदेश को भक्तों तक पहुंचाया।चर्च ऑफ क्राइस्ट, पांडु नगर में रेव. सैमुअल सिंह, रीना सिंह, राजू शर्मा, नौसिक जॉर्ज, ब्रदर डेनियल सिंह, मनोज, फ्रांसिस आदि ने भाग लिया।न्यू लाइफ चर्च, काकादेव में पादरी डायमंड यूसुफ ने कहा कि ÷यीशु मसीह के जन्म का उद्देश्य मानव को पापों से मुक्त करना था। पुराने नियम में इंसान को पापों से छुटकारा पाने के लिए जानवरों की कुर्बानी देनी पड़ती थी। इसलिए परमेश्वर ने यीशु को संसार में भेजा ताकि वह मानव जाति के पापों के लिए अपना शरीर बलिदान कर सके।

सम्पादकीय

संवैधानिक संस्थाओं की अग्निपरीक्षा

पश्चिम बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत निर्वाचन नामावलियों के निस्तारण में लगे, सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त न्यायिक अधिकारियों को नौ घंटे तक बंधक बनाया जाना दुर्भाग्यपूर्ण ही है। इन सात बंधक अधिकारियों में तीन महिलाएं भी शामिल थीं जिन्हें नौ घंटे तक बिना खाना-पानी के रोके रखा गया। स्वाभाविक रूप से इस घटना पर सुप्रीम कोर्ट ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव व डीजीपी समेत कई उच्च अधिकारियों का कारण बताओ नोटिस भी दिए हैं। उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर प्रक्रिया को पूरा करने के लिए सात अप्रैल की तिथि निर्धारित की है। पिछले महीने तक साठ लाख में 47 लाख आपत्तियों का निस्तारण होने पर सुप्रीम कोर्ट ने भी संतुष्टि व्यक्त की है। बहरहाल, इसके बावजूद एसआईआर प्रक्रिया को लेकर किसी व्यक्ति को कोई शिकायत है तो उसका निस्तारण निर्धारित प्रक्रिया से ही किया जा सकता है। बहरहाल, मालदा का यह घटनाक्रम कानून व्यवस्था और संवैधानिक संस्थाओं के लिए भी अग्निपरीक्षा है। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने पश्चिम बंगाल को राजनीतिक रूप से ध्रुवीकृत तथा चुनाव आयोग ने राज्य में जंगलराज होने की बात कही है। ध्यान रहे कि इससे पहले भी निर्वाचन अधिकारियों से मारपीट व घेराव की घटनाएं सामने आई हैं। जाहिर बात है कि पश्चिम बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर कुछ लोगों में असंतोष है। मतदाता सूची से नाम कटने वाले लोगों की तल्ख प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। लेकिन यह तंत्र के प्रति बढ़ते अविश्वास का भी प्रतीक है, जिसके चलते ही घटनाक्रम के बाद सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी ने पश्चिम बंगाल में इस महीने होने वाले चुनाव से पहले कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं। अब राज्य में विधानसभा चुनाव होने में कुछ ही दिन बाकी हैं। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में इस माह की 23 व 29 अप्रैल को मतदान होना है। ऐसे में मालदा का घटनाक्रम निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया के लिए चुनौती दर्शाने वाला है।बहरहाल, मालदा के कालियाचक में भीड़ द्वारा अभिव्यक्त आक्रोश और न्यायिक अधिकारियों को बंधक बनाने का घटनाक्रम यह बताता है कि लोगों में एसआईआर प्रक्रिया को लेकर व्यापक असंतोष है। यद्यपि कानून व्यवस्था को हाथ में लेना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता है, लेकिन स्थानीय पुलिस प्रशासन द्वारा पहले ही घटना का आकलन न कर पाना और समय रहते कार्रवाई न करना, तंत्र की विफलता को ही दर्शाता है। जिसे कानून व्यवस्था की नाकामी ही कहा जा सकता है। जब राज्य में एसआईआर काम में लगे लोगों को पहले से लोगों के आक्रोश का सामना करना पड़ रहा था, तो इस कार्य में लगे न्यायिक अधिकारियों की सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था की जानी चाहिए थी। लोगों में उपजे अविश्वास के मद्देनजर इस दिशा में सतर्क पहल जरूरी थी। इसमें दो राय नहीं कि पश्चिम बंगाल में व्यापक पैमाने पर विदेशियों की घुसपैठ की समस्या रही है। ऐसे में एसआईआर प्रक्रिया द्वारा मतदाताओं की पड़ताल राष्ट्रीय सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण विषय है।

लेकिन जटिल प्रक्रिया के चलते व जरूरी कागजों के उपलब्ध न होने से कुछ वैध मतदाताओं को अपनी वैधता की पुष्टि के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चिंताओं को भी समझने की जरूरत है। ऐसे मतदाताओं के अविश्वास को भी दूर करने की जरूरत है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट इस प्रक्रिया पर शुरू से ही नजर बनाये हुए है। चुनाव आयोग भी दावा कर रहा है कि किसी योग्य मतदाता के साथ अन्याय नहीं होगा। लेकिन विडंबना है कि उन्हें ही आक्रोशित भीड़ ने बंधक बनाया।

घरवाली-बाहरवाली का त्रास झेलती स्त्री

निरंजन भंडारी

जो माता-पिता न जाने कितने संसाधन लगाकर अपनी बेटियों को पालते हैं, उन्हें पढ़ाते, लिखाते हैं, उनका विवाह करते हैं, उनकी अच्छी गृहस्थी के सपने देखते हैं, यदि वही लड़की इस तरह से जीवन के थपेड़ों को सहने के लिए...जो माता-पिता न जाने कितने संसाधन लगाकर अपनी बेटियों को पालते हैं, उन्हें पढ़ाते, लिखाते हैं, उनका विवाह करते हैं, उनकी अच्छी गृहस्थी के सपने देखते हैं, यदि वही लड़की इस तरह से जीवन के थपेड़ों को सहने के लिए पति और कानून द्वारा अकेली छोड़ दी जाएगी, तो इन माता-पिता का क्या होगा। हाल ही में प्रयागराज हाईकोर्ट ने कहा कि एक शादीशुदा पुरुष, किसी अन्य महिला के साथ लिव-इन में रह सकता है।

इस तरह रहना कोई अपराध नहीं है। नैतिकता और कानून को अलग रखना होगा। अदालत ने यह भी कहा कि पत्नी अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए, ऐसे आदमी से तलाक और मुआवजा ले सकती है। जबकि प्रयागराज हाईकोर्ट की एक दूसरी बैंच ने निर्णय दिया कि वे उन लिव-इन जोड़ों को सुरक्षा नहीं दे सकते, जो पहले से ही शादीशुदा हैं और जिन्होंने तलाक नहीं लिया है। ऐसे जोड़ों के जीवन में दखल देने का अधिकार भी किसी को नहीं है। लेकिन इसे कानूनी मान्यता तब तक नहीं दी जा सकती, जब तक कि तलाक न हो। वास्तव में, परम स्वतंत्रता जैसी चीज कोई नहीं होती। हां, यदि ऐसे जोड़ों को किसी हिंसा का सामना करना पड़ता है, तो वे पुलिस से सुरक्षा मांग सकते हैंइसी तरह का फैसला दिल्ली हाईकोर्ट ने भी दिया था। अदालत ने कहा था कि दो वयस्क अपनी मर्जी से साथी चुन सकते हैं। और साथ रहने का फैसला कर सकते हैं। इन्हें यदि अपने परिवार के लोगों से खतरा है, तो पुलिस सुरक्षा लेने का पूरा अधिकार है।कानून को देखें तो बिना तलाक लिए इस तरह रहने की इजाजत नहीं होती। इसके अलावा बहुत-सी अदालतों ने इसे पति या पत्नी के अधिकारों का उल्लंघन भी माना है। एक जमाने में भारत में बदचलनी (एडल्टरी) को कानूनन अपराध माना जाता था, लेकिन अब वह अपराध नहीं है। लेकिन इसके आधार पर तलाक मिल सकता है। अक्सर बहुत से सामाजिक मुद्दे कानूनी दांव-पेच में खो जाते हैं।बहुत से पुरुषों की सोच रहती है कि घर में एक पत्नी है, जो उनके परिवार की जरूरतों और बच्चों के पालन-पोषण के लिए है, लेकिन बाहर घूमने-फिरने, मौज उड़ाने के लिए एक और स्त्री चाहिए। घरवाली बाहरवाली, जैसी फिल्में विगत में सुपरहिट होती रही हैं। मशहूर हिंदी लेखक स्व. जैनेंद्र कुमार ने तो सत्तर के दशक में एक प्रस्थापना ही दे डाली थी कि लेखकों को प्रेरणा पाने के लिए पत्नी के अलावा एक प्रेमिका भी चाहिए। उस समय जैनेंद्र जी के इस कथन पर बहुत विवाद भी हुआ था। कई स्त्रियों ने कहा था कि यदि पत्नियां भी ऐसा ही कहने लगें कि उन्हें भी लिखने के लिए पति के अलावा एक और प्रेमी चाहिए, तो क्या होगा।

यह भी सच है कि दबे-छिपे ऐसा होता भी रहता है। बहुत-सी जगह कानून एक तरफ चलता है, और समाज के दवाब दूसरी तरफ। अब भी कई कम्युनिटीज ऐसी हैं, जहां पुरुष कई विवाह कर लेते हैं। कई जगहों पर स्त्रियों को भी यह सुविधा प्राप्त है। यदि हालिया निर्णय के संदर्भ में पढ़ें, शादीशुदा पुरुषों को कानून का सहारा भी मिल जाएगा कि वे किसी और के साथ रह सकें।

जो स्त्री किसी की पत्नी है, उसे हमेशा यह डर सताता रहेगा कि कहीं उसका पति किसी और के साथ रहने चला गया, तो उसका क्या होगा। हर स्त्री के पास इतने संसाधन नहीं होते कि वह ऐसे मामले में अदालतों के चक्कर लगा सके और न्याय प्राप्त कर सके। यदि इस स्त्री के बच्चे हैं, तो उनका क्या होगा। पति तो किसी भी तरह की जिम्मेदारी से मुक्त हो गया होगा। और क्या मात्र तलाक मिलने या मुआवजा मिलने से इस तरह से त्यागी गई स्त्रियों का जीवन चल जाएगा।अकेलेपन और अपमान की उस भावना का क्या, जो इन स्त्रियों को झेलनी पड़ेगी। त्यागना या रिजेक्शन एक ऐसी भावना होती है, जो पल-पल सताती है।

एलपीजी का विकल्प बन सकती है बॉयोगैस

वर्तमान वैश्विक संकट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। बायोगैस जैसे स्वदेशी और टिकाऊ विकल्पों को अपनाकर भारत न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा कर सकता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास को गति दे सकता है।भारत आज ऊर्जा परिवर्तन के एक चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। एक ओर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जैसी योजनाओं ने करोड़ों घरों तक एलपीजी पहुंचाकर स्वच्छ ईंधन की क्रांति लाई है, वहीं दूसरी ओर बढ़ती आयात निर्भरता, कीमतों में उतार-चढ़ाव और वैश्विक भू-राजनीतिक संकटों ने देश की ऊर्जा सुरक्षा पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

हाल के समय में पश्चिम एशिया के तनाव के कारण एलपीजी आपूर्ति प्रभावित होने की घटनाओं ने इस चिंता को और गहरा किया है। अमेरिकाङ्गइस्राइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने वैश्विक ऊर्जा बाजार को अस्थिर कर दिया है।निःसंदेह, यह स्थिति भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देश के लिए एक चेतावनी है कि अब ऊर्जा सुरक्षा के प्रश्न को टालना संभव नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय संकटों का सीधा असर आम नागरिकों पर पड़ता है–पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ते हैं, महंगाई बढ़ती है और घरेलू रसोई तक प्रभावित होती है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि हम पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के विकल्प तलाशें। इसी संदर्भ में बायोगैस एक मजबूत और टिकाऊ समाधान के रूप में उभरती है।बायोगैस जैविक कचरे–जैसे गोबर, कृषि अवशेष, रसोई कचरा आदि–से उत्पन्न गैस है, जिसमें मुख्य रूप से मीथेन होती है। यह गैस खाना पकाने, बिजली उत्पादन और वाहन ईंधन के रूप में भी इस्तेमाल की जा सकती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में बायोगैस की अपार संभावनाएं हैं। गांवों में पशुधन और जैविक कचरे की उपलब्धता इसे एक व्यावहारिक विकल्प बनाती है।गांवों में छोटे और मध्यम आकार के बायोगैस

प्लांट स्थापित कर स्थानीय स्तर पर गैस का उत्पादन किया जा सकता है। इससे एलपीजी सिलेंडर पर निर्भरता कम होगी। आधुनिक तकनीक के माध्यम से बायोगैस को शुद्ध कर कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) बनाया जा सकता है, जो एलपीजी और सीएनजी का प्रभावी विकल्प है। 'गोबर-धन योजना' और 'एसएटीएटी' जैसी योजनाएं बायोगैस उत्पादन को बढ़ावा दे रही हैं। इनके माध्यम से किसानों और उद्यमियों को आर्थिक सहायता और बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है। शहरों में निकलने वाले जैविक कचरे को बायोगैस में बदलकर न केवल ऊर्जा पैदा की जा सकती है, बल्कि कचरा प्रबंधन की समस्या का भी समाधान किया जा सकता है।भारत में एलपीजी की सालाना खपत लगभग 28-31 मिलियन टन के आसपास है। भारत में एलपीजी का घरेलू उत्पादन लगभग 10ङ्ग12 एमएमटी प्रति वर्ष है। यानी कुल मांग का केवल 35ङ्ग40 प्रतिशत ही देश में बनता है। यानी 60ङ्ग65 प्रतिशत एलपीजी आयात पर निर्भरता। भारत आधा से ज्यादा एलपीजी बाहर से खरीदता है। आयात का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आता है। इसलिए हॉर्मुज स्ट्रेट जैसे संकट भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए सीधा खतरा हैं।भारत में अभी लगभग 132 सीबीजी प्लांट चल रहे हैं। इनकी कुल उत्पादन क्षमता लगभग 920 टन प्रतिदिन है। यानी अभी बायोगैस का योगदान 1 प्रतिशत से भी कम है।

भारत 20 एमएमटी सीबीजी बना सकता है। कुल संभावित क्षमता कचरा, गोबर, अवशेष की। कुल क्षमता लगभग 60 एमएमटी तक मानी जाती है। इसका मतलब भारत अपनी पूरी एलपीजी जरूरत (30 एमएमटी) बायोगैस से पूरा कर सकता है। फिलहाल अभी लगभग 300 से अधिक नए प्लांट निर्माणाधीन हैं। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी के अनुसार भारत में 2030 तक बायोगैस उत्पादन 7 गुना तक बढ़ सकता है।बायोगैस न केवल सस्ती है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी है। इससे कार्बन उत्सर्जन कम होता है, जैविक खाद भी मिलती है और किसानों की आय बढ़ती है। साथ ही, यह स्थानीय रोजगार के अवसर भी पैदा करती है। हालांकि, बायोगैस के क्षेत्र में कुछ चुनौतियां भी हैं–जैसे शुरुआती निवेश, तकनीकी जानकारी की कमी और जागरूकता का अभाव।

प्यास से जूझता सखरेजः दो साल से ठप जलापूर्ति, बूंद-बूंद को तरस रहे ग्रामीण

- 20 महीनों से खराब पड़ी पानी की टंकी की बोरिंग, कई बार शिकायत
- कई गांवों में गहराया पेयजल संकट, 2 किमी दूर से ढोना पड़ रहा पानी
- समाधान न हुआ तो चुनाव बहिष्कार, 8 अप्रैल को चक्का जाम की चेतावनी

सखरेज में टंकी के नीचे प्रदर्शन करते ग्रामीण

गांव से दूर नल पर पानी भरने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते ग्रामीण।

स्वराज इंडिया ब्यूरो

बिल्हौर (कानपुर)। गर्मी के तेवर चढ़ने के साथ ही शिवराजपुर ब्लॉक का सखरेज गांव भीषण पेयजल संकट की चपेट में आ गया है। हालात इतने गंभीर हैं कि ग्रामीणों को पीने के पानी के लिए रोजाना एक से दो किलोमीटर तक का सफर तय करना पड़ रहा है। गांव में बनी पानी की टंकी की बोरिंग करीब 20 महीनों से खराब पड़ी है, जिससे जलापूर्ति पूरी तरह ठप है और लोगों का जीवन संकट में आ गया है।

सखरेज के साथ जिंदपुर, दिलीपपुर, गड़रियापुरवा, सुज्जापुर और कंठीपुर जैसे आसपास के गांव भी इस समस्या से प्रभावित हैं। ग्रामीणों को मजबूरी में ट्रैक्टर-ट्रॉली, बाइक और बर्तनों के सहारे दूसरे गांवों से पानी लाना पड़ रहा है। इससे न केवल समय और श्रम की बर्बादी हो रही है, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी भी अस्त-व्यस्त हो गई है। गांव में मौजूद हैंडपंप और कुएं खारा पानी दे रहे हैं, जो पीने योग्य नहीं है। सुबह और शाम पानी भरने के लिए लंबी कतारें लगती हैं, वहीं मवेशियों के लिए पानी जुटाना भी बड़ी चुनौती बन चुका है। महिलाओं और बच्चों पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है, जिन्हें घंटों पानी के इंतजार में बिताने पड़ते हैं।

ग्रामीणों का आरोप है कि जल निगम द्वारा कराई गई बोरिंग फेल होने के बाद कई बार शिकायतें की गईं, लेकिन हर बार केवल आश्वासन ही मिला। दो साल बीत जाने के बावजूद समस्या जस की तस बनी हुई है। इससे नाराज ग्रामीणों का आक्रोश अब खुलकर सामने आने लगा है। शुक्रवार को सपा नेता रचना सिंह गौतम के नेतृत्व में ग्रामीणों ने पानी की टंकी परिसर में जोरदार प्रदर्शन किया और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे आगामी चुनाव का बहिष्कार करेंगे।

बड़ा सवालः दो साल तक क्यों सोया रहा प्रशासन?

यह समस्या कोई नई नहीं है, बल्कि करीब दो वर्षों से बनी हुई है। इसके बावजूद जिम्मेदार अधिकारियों की उदासीनता ने हालात को और गंभीर बना दिया है। सवाल यह है कि आखिर इतनी लंबी अवधि तक जलापूर्ति ठप रहने के बावजूद विभाग ने कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठाया? क्या ग्रामीणों की बुनियादी जरूरतें प्रशासन की प्राथमिकता में नहीं हैं, या फिर जिम्मेदारी तय करने से बचा जा रहा है?

पेयजल संकट बना जनआक्रोश का कारण

सखरेज गांव की स्थिति यह दर्शाती है कि यदि समय रहते बुनियादी समस्याओं का समाधान न किया जाए, तो वह जनआक्रोश में बदल जाती हैं। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस चेतावनी को कितनी गंभीरता से लेता है और कब तक गांव के लोगों को राहत मिलती है।

अल्टीमेटमः 8 अप्रैल को चक्का जाम की तैयारी

सपा नेता रचना सिंह गौतम ने प्रशासन को तीन दिन का अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि यदि पानी की टंकी की बोरिंग को ठीक कर जलापूर्ति बहाल नहीं की गई, तो 8 अप्रैल को चक्का जाम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह आंदोलन गांव से शुरू होकर सड़कों तक जाएगा और इसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

गांव में पानी की टंकी 2014 में बनी थी और तब से ठीक तरह से चल रही थी, लेकिन पिछले दो साल से खराब पड़ी है। गांव में पानी खारा है, इसलिए पीने लायक नहीं मिलता। हम लोग करीब एक किलोमीटर दूर से पानी लाने को मजबूर हैं। हर जगह शिकायत की, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला। न अधिकारी ध्यान दे रहे हैं, न ही जनप्रतिनिधि।

– राज कुमार शुक्ला, ग्रामीण

ब्लॉक में प्रार्थना पत्र दिया गया और बिल्हौर में आए जल मंत्री को भी गांव की समस्या से अवगत कराया, लगातार शिकायत करते रहे लेकिन आज तक कोई समाधान नहीं हुआ। लगातार अनदेखी से गांव के लोग परेशान हैं। यदि जल्द समस्या का हल नहीं निकला, तो हम सभी ग्रामीण आगामी विधानसभा चुनाव का बहिष्कार करेंगे।

– ऋषिकांत तिवारी, ग्रामीण

मेरी जलकल के उच्च अधिकारियों से बात हुई है। कल से कार्य प्रारंभ हो जाएगा और व्यवस्था फिर से पहले की तरह सुचारू रूप से चलने लगेगी।

– शुभम बाजपेई, भाजपा ब्लॉक प्रमुख, शिवराजपुर

युवक पर जानलेवा हमला सपा नेता गिरफ्तार

स्वराज इंडिया ब्यूरो

बिल्हौर(कानपुर)। अरौल थाना क्षेत्र में युवक पर हुए जानलेवा हमले के मामले में पुलिस ने सपा नेता अमित उर्फ़ छोटू को गिरफ्तार कर लिया है। घटना के बाद से ही पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी थी।

पीड़ित आदित्य कुमार के अनुसार, सपा नेता छोटू यादव ने अपने साथियों के साथ मिलकर उस पर हमला कर दिया था, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर छोटू यादव, देवेश यादव, रोहित यादव और अभिनाश के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। शनिवार को

पुलिस ने मुख्य आरोपी सपा नेता छोटू यादव को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। इंस्पेक्टर जनार्दन यादव ने बताया कि अमित उर्फ़ छोटू को गिरफ्तार कर शांति भंग की कार्रवाई की गई है।

यूपीपीसीएस पास कर लौटीं श्वेता वर्मा का भव्य स्वागत

स्वराज इंडिया ब्यूरो

बिल्हौर(कानपुर)। शिवराजपुर कस्बे के सती प्रसाद नगर निवासी जगदीश वर्मा की पुत्री श्वेता वर्मा ने यूपीपीसीएस परीक्षा में सफलता हासिल कर न सिर्फ अपने परिवार बल्कि पूरे क्षेत्र का नाम रोशन कर दिया। शुक्रवार को पहली बार घर पहुंचने पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। परिजनों और मोहल्ले के लोगों ने फूल-मालाओं से उनका अभिनंदन किया। मिठाइयां बांटी गईं और पूरे इलाके में जश्न जैसा दिखा। लोग उन्हें बधाई देने को उमड़ पड़े। स्थानीय लोगों का कहना है कि श्वेता की इस उपलब्धि ने क्षेत्र की बेटियों और युवाओं को बड़ा संदेश दिया है कि मेहनत और लगन से कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है। आनंद वर्मा, केशव प्रसाद पाल, मीना दुबे, राघवेंद्र श्रीवास्तव, राम प्रसाद कुरील, होरीलाल, कमल, निराला और मोनू वर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

➪ युवाओं, खासतौर पर बेटियों के लिए बनी मिसाल

स्कूल में घुसा जहरीला धुआं, 25 बच्चे बीमार, 11 को मेडिकल कॉलेज रेफर

झाड़ियां जलाने से फैला धुआं, गुड फ्राइडे पर स्कूल खोलने पर नोटिस, जांच के आदेश

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कुशीनगर। सेवरही क्षेत्र स्थित ग्रीनलैंड इंटरनेशनल स्कूल में शुक्रवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब परिसर में अचानक जहरीला धुआं भर जाने से 25 बच्चों की तबीयत बिगड़ गई। घटना के बाद स्कूल में अफरा-तफरी का माहौल बन गया और कई बच्चे घबराकर अचेत हो गए। सभी प्रभावित बच्चों को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सेवरही ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत में 11 बच्चों को पडरौना मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

डॉक्टरों के अनुसार कुछ बच्चों को सांस लेने में दिक्कत और चक्कर आने की शिकायत थी। राहत की बात यह रही कि तीन बच्चों को उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई, जबकि अन्य बच्चों का इलाज पीआईसीयू में जारी है और उनकी हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि स्कूल के पीछे एक महिला द्वारा झाड़-झंखाड़ जलाए जाने से घना धुआं उठकर स्कूल परिसर में फैल गया। बताया जा रहा है कि झाड़ियों में भांग जैसे पौधे भी हो सकते थे, जिससे धुएं में नशीले तत्व शामिल हो गए और बच्चों पर इसका गंभीर असर पड़ा।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और संबंधित महिला को हिरासत में लेकर पूछताछ की, हालांकि बाद में उसे छोड़ दिया गया। प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू कर दी है। इस घटना ने एक और सवाल खड़ा कर दिया है कि गुड फ्राइडे जैसे अवकाश के दिन स्कूल क्यों खोला गया। जानकारी के मुताबिक, स्कूल प्रबंधन ने प्रमाणपत्र वितरण के लिए बच्चों को बुलाया था। इस पर प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए स्कूल प्रबंधन को नोटिस जारी किया है और जवाब तलब किया है।

जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर और पुलिस अधीक्षक केशव कुमार ने अस्पताल पहुंचकर बच्चों का हाल जाना और डॉक्टरों को बेहतर इलाज के निर्देश दिए। प्रशासन का कहना है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। बड़ा सवाल यह है कि स्कूल परिसरों के आसपास खुले में कचरा या झाड़ियां जलाने पर रोक क्यों नहीं? अवकाश के दिन बच्चों को बुलाने की क्या मजबूरी थी? क्या स्कूलों के लिए आपदा प्रबंधन और सुरक्षा प्रोटोकॉल पर्याप्त हैं? यह घटना एक बार फिर बच्चों की सुरक्षा को लेकर लापरवाही और प्रशासनिक सतर्कता की जरूरत को उजागर करती है।

बच्चों से जुड़े हादसों की टाइमलाइन

» 2024, लखनऊ–स्कूल बस में आग लगने से कई बच्चे झुलसे, सुरक्षा मानकों पर उठे सवाल

» 2023, गाजियाबाद– स्कूल के पास कूड़ा जलाने से धुएं में कई बच्चों की तबीयत बिगड़ी

» 2022, दिल्ली– क्लासरूम में एसी गैस लीक होने से 15 से ज्यादा छात्र बीमार

» 2019, मुजफ्फरपुर (बिहार)– मिड-डे मील में जहरीला खाना खाने से कई बच्चों की मौत, देशभर में हड़कंप

» 2013, सारण (बिहार)–मिड-डे मील हादसे में 20 से अधिक बच्चों की मौत, सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा सवाल

» 25 बच्चे जहरीले धुएं की चपेट में आए, 11 की हालत गंभीर

» गुड फाइडे पर स्कूल खोलना पड़ा भारी

» झाड़ियां जलाने से फैला धुआं बना हादसे की वजह

» स्कूल प्रबंधन को नोटिस, जांच शुरू

» धुएं में नशीले तत्व होने की आशंका

» सभी बच्चों की हालत फिलहाल स्थिर

रूस की सेना में तैनात रामपुर के युवक की गोली लगने से मौत

» परिवार का इकलौता सहारा था शावेद, शव लेने दिल्ली रवाना हुए परिजन

» नौ महीने पहले काम के लिए गया था विदेश, बाद में आर्मी में हुआ भर्ती

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

रामपुर। जिले के मसवासी क्षेत्र के गांव भूबरा मुहस्तेकम के मजरा फतेहगंज निवासी 22 वर्षीय शावेद की रूस में गोली लगने से मौत हो गई। शुक्रवार को जैसे ही यह खबर गांव पहुंची, परिजनों में कोहराम मच गया और पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई। शावेद का शव लेने के लिए परिजन दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं, जहां शनिवार तड़के उसके पार्थिव शरीर के पहुंचने की सूचना है।

परिजनों के अनुसार, शावेद करीब नौ महीने पहले स्टील फर्नीचर का काम करने की बात कहकर रूस गया था। वहां दो महीने काम करने के बाद वह रूस की सेना में भर्ती हो गया। गुरुवार को ड्यूटी के दौरान उसे गोली लग गई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना की जानकारी रूस की आर्मी बटालियन ने फोन के जरिए उसके पिता को दी।शावेद अपने परिवार का मुख्य सहारा था। उसका छोटा भाई मानसिक रूप से अस्वस्थ है, ऐसे में घर की पूरी जिम्मेदारी उसी के कंधों पर थी। उसकी असमय मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। गांव के लोगों ने उसे मेहनती और मिलनसार युवक बताते हुए कहा कि वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए विदेश गया था, लेकिन उसकी जिंदगी बीच राह में ही खत्म हो गई। अब उसके घर में केवल मातम और यादें ही शेष हैं।

पंडोखर धाम महोत्सव में दिखा देशभर का आध्यात्मिक और खेल प्रतिभा का संगम

» पंडोखर धाम महोत्सव में दिखा देशभर का आध्यात्मिक और खेल प्रतिभा का संगम

» मलखम प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने दिखाए हैरतअंगेज करतब, पीठाधीश्वर ने दिया आशीर्वाद

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

पंडोखर (एमपी)। पंडोखर धाम महोत्सव में इन दिनों भक्ति, परंपरा और प्रतिभा का अनूठा संगम देखने को मिल रहा है। महोत्सव के तहत देशभर से आए साधु-संतों की उपस्थिति ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया है। लगातार बढ़ती श्रद्धालुओं की भीड़ और संतों का जमावड़ा इस आयोजन की भव्यता को और अधिक बढ़ा रहा है।

महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज मलखम प्रतियोगिता का आयोजन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस प्रतियोगिता में भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगियों ने पारंपरिक मलखम के साथ-साथ आधुनिक शैली में भी कई कठिन और रोमांचक करतब प्रस्तुत किए, जिन्हें देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों की संतुलन क्षमता, फुर्ती और साहस ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। बच्चों और युवाओं की इस भागीदारी ने यह संदेश भी दिया कि पारंपरिक खेलों के प्रति आज भी युवाओं में गहरी रुचि बनी हुई है। कार्यक्रम के अंत में पंडोखर धाम के पीठाधीश्वर ने सभी प्रतिभागियों को आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने प्रतियोगियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किए। पीठाधीश्वर ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे आयोजनों से न केवल आध्यात्मिक चेतना का विस्तार होता है, बल्कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा भी मिलती है।महोत्सव में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भी प्रतियोगिता का भरपूर आनंद लिया और प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। पंडोखर धाम महोत्सव इस प्रकार धार्मिक आस्था के साथ-साथ सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों का भी एक महत्वपूर्ण मंच बनता जा रहा है, जो समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रहा है।

रसूलाबाद में कारों की आमने-सामने भिड़ंत, दो युवक गंभीर घायल

सलेमपुर महेरा के पास हादसा, एक कार खड्डे में गिरी

» स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर देहात। शुक्रवार शाम रसूलाबाद-झींझक रोड पर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब सलेमपुर महेरा गांव के निकट दो कारों की आमने-सामने जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि एक कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गहरे खड्डे में जा गिरी, जबकि दूसरी कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे के बाद मौके पर राहगीरों की भीड़ जमा हो गई और चीख-पुकार मच गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दोनों वाहन तेज रफ्तार में थे, इसी दौरान आमने-सामने टकरा गए। टक्कर की आवाज दूर तक सुनाई दी। स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए घायलों को कार से बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू कराया। एंबुलेंस की मदद से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) रसूलाबाद लाया गया, जहां डाक्टर बृजेश कुमार ने प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर हालत को देखते हुए कानपुर रेफर कर दिया। घायलों की पहचान महेंद्र पुत्र रामाधार और सद्दाम हुसैन निवासी उदैतापुर, जनपद कन्नौज के रूप में हुई है। दोनों को गंभीर चोटें आई हैं और उनकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है। हादसे के बाद कुछ समय के लिए सड़क पर यातायात भी प्रभावित रहा, जिसे पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद सामान्य कराया। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाकर रास्ता साफ कराया। प्रारंभिक तौर पर हादसे की वजह तेज रफ्तार और लापरवाही मानी जा रही है।

नाबालिग बहनों से दुष्कर्म के आरोपी दो युवक गिरफ्तार

» स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर देहात।जनपद में महिला सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना रूरा पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए नाबालिग बालिकाओं को बहला कर ले जाने और दुष्कर्म करने के मामले में वांछित दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

10 मार्च 2026 को थाना रूरा में एक पिता ने तहरीर देकर बताया कि उसकी दो नाबालिग पुत्रियां 5 मार्च को कपड़ा खरीदने की बात कहकर घर से निकली थीं, लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटीं। फोन पर संपर्क करने पर उन्होंने सोनीपत जाने की बात कही और अगले दिन शादी कर लेने की जानकारी दी। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। जांच के दौरान पुलिस ने दोनों बालिकाओं को बरामद कर न्यायालय में बयान दर्ज कराए। साक्ष्यों के आधार पर मामले में धारा 64(1)/65(1) बीएनएस तथा पॉक्सो एक्ट की गंभीर धाराएं भी बढ़ाई गईं। थाना रूरा पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 3 अप्रैल 2026 को थाना रूरा गेट के पास से दोनों नामजद आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों में विशाल निवासी ग्राम माधवपुर, कन्नौज तथा कृष्णा निवासी ग्राम माधवपुर, थाना ठठिया, जनपद कन्नौज शामिल हैं। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक रामवीर सिंह, हेड कांस्टेबल अजय गुप्ता एवं महिला कांस्टेबल शालिनी शामिल रहीं।

भावुक माहौल में सेवानिवृत्त शिक्षक को दी गई यादगार विदाई

बिल्हा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में बच्चों से लेकर शिक्षकों ने जताया सम्मान

» स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर देहात। रसूलाबाद क्षेत्र के बिल्हा स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक मो. इसरार खान की सेवानिवृत्ति पर आयोजित विदाई समारोह भावनात्मक माहौल में संपन्न हुआ। 31 मार्च को उनका सेवा कार्यकाल पूरा होने पर विद्यालय परिवार ने उन्हें सम्मानित किया।

इस दौरान बच्चे उनसे लिपटकर बिलख पड़े, वहीं शिक्षक और कर्मचारी भी अपनी भावनाएं नहीं रोक सके।

अध्यापक वसीम अहमद ने कहा कि मो. इसरार खान समय के पाबंद और छात्रों के प्रति स्नेही रहे।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दिया और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। जीएन इंटर कॉलेज के फाउंडर ने उन्हें मोमेंटो भेंट कर उज्ज्वल भविष्य की कामना की।समारोह में नागेंद्र वर्मा, सुशील द्विवेदी, दीपा गुप्ता, अख्तर हुसैन, मो जावेद, सूर्य प्रताप, इमरान, आज़ाद अली, शिवकुमार, रेखा देवी, अफसर अली, नसीन फातिमा, राजकुमार कुशवाहा, श्रष्टि कमल, स्वर्णा गुप्ता, विवेक कुमार, शीला देवी, अरमान परवेज़, प्रशांत अग्निहोत्री, इरफान, रेहान खान, सलमान खान और मयंक त्रिपाठी सहित कई लोग मौजूद रहे। विद्यालय परिवार ने कहा कि उनका स्नेह और योगदान सदैव याद किया जाएगा।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में उठीं जनसमस्याएं

शादी के लिए गैस सिलेंडर की मांग ने खींचा ध्यान

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। रसूलाबाद तहसील सभागार में शनिवार को आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में आम जनता की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपजिलाधिकारी सर्वेश सिंह ने की, जिसमें विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। समाधान दिवस में सबसे अधिक शिकायतें राजस्व विभाग से संबंधित प्राप्त हुईं, जिनके त्वरित निस्तारण के निर्देश अधिकारियों को दिए गए।

इस दौरान माल का पुरवा गांव निवासी मनोज कुमार दुबे की फरियाद ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। उन्होंने

» राजस्व मामलों की रही भरमार, फरियादियों ने प्रशासन से त्वरित कार्रवाई की लगाई गुहार

उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि आगामी 20 अप्रैल को उनकी बेटी का विवाह है, लेकिन शादी में भोजन व्यवस्था के लिए पर्याप्त गैस सिलेंडर उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने प्रशासन से विवाह के मद्देनजर गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने की मांग की, ताकि आयोजन में किसी प्रकार की बाधा न आए।वहीं, सेन नाय मोहम्मद नगर निवासी जलील अहमद ने भी अपनी शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बताया कि उनके पट्टे के तालाब से कुछ दबंगों ने जबरन मछलियां चोरी कर लीं। आरोप है कि विरोध करने पर दबंगों ने गुंडागर्दी भी की। पीड़ित ने मामले में सख्त कार्रवाई की मांग की है। समाधान दिवस में पहुंचे अन्य फरियादियों ने भी बिजली, पानी, सड़क और सरकारी योजनाओं से जुड़ी समस्याएं प्रशासन के समक्ष रखीं। अधिकारियों ने संबंधित विभागों को निर्देशित करते हुए शिकायतों का जल्द निस्तारण सुनिश्चित करने को कहा।

इस अवसर पर तहसीलदार संतोष कुमार, खंड विकास अधिकारी विपुल विक्रम, एडीओ पंचायत जेपी शुक्ला, एसडीओ सहादत सलीम, पूर्ति निरीक्षक विकास कनौजिया, डॉ. सौरभ शाक्य सहित कई विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। प्रशासन ने भरोसा दिलाया कि सभी शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर समाधान कराया जाएगा, ताकि जनता को राहत मिल सके।

बाइक फिसलने से युवक गंभीर रूप से घायल

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। रसूलाबाद थाना क्षेत्र के अंतर्गत असालतगंज बिरहुन मार्ग पर अनियंत्रित होकर बाइक फिसल जाने युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। दुर्घटना का शिकार होने वाला युवक विकास निवासी केवलेपुर सुजानपुर किसी काम से बिरहुन गया था और घर वापस लौट रहा था। असालतगंज के समीप पहुंचते ही अचानक उसकी बाइक अनियंत्रित हो गई। राहगीरों ने उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया

युवक ने फांसी लगाकर जान देने का किया प्रयास

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। रसूलाबाद क्षेत्र के लक्ष्मीपुर गम्भीरा निवासी विजय कुमार ने घर के अंदर फांसी लगाकर जान देने का प्रयास किया लेकिन परिजनों ने उसे देख लिया। किसी तरह फांसी के फंदे से उतार कर आनन-फानन में महाराणा प्रताप सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रसूलाबाद ले गए। जहां डॉक्टर बृजेश कुमार ने युवक को हैलट रेफर कर दिया।

फर्जी मोहन सिंह बनाकर जमीन हड़पने का खेल, भूमाफियाओं पर गंभीर आरोप

50 वर्ष पुरानी जमीन पर कब्जे की साजिश, समाधान दिवस में शिकायत से मचा हड़कंप

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। अकबरपुर तहसील के ग्राम जगजीवनपुर में भूमाफियाओं द्वारा फर्जी दस्तावेज तैयार कर जमीन हड़पने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। अधिवक्ता राघवेंद्र दुबे ने समाधान दिवस में प्रार्थना पत्र देकर पूरे प्रकरण की शिकायत करते हुए सख्त कार्रवाई की मांग की है।

प्रार्थना पत्र के अनुसार गाटा संख्या 89 की जमीन को लगभग 50 वर्ष पूर्व मोहन सिंह

नामक व्यक्ति ने खरीदा था। इसके बाद से उक्त व्यक्ति का कोई अता-पता नहीं है। इसी का फायदा उठाकर भूमाफिया विजय पाल निवासी पाल नगर ज्योतिष और उसके साथी तुषार खंडेलवाल ने सुनियोजित तरीके से फर्जी दस्तावेज तैयार किए।

आरोप है कि आरोपियों ने पहले फर्जी मोहन सिंह खड़ा कर जमीन को अपने नाम दर्ज कराया और फिर उसी जमीन का बैनामा तुषार खंडेलवाल निवासी स्वरूप नगर कानपुर के नाम कर दिया। इस पूरे खेल में सरकारी रिकॉर्ड से छेड़छाड़ और फर्जीवाड़े की आशंका जताई जा रही है।

अधिवक्ता राघवेंद्र दुबे ने इसे बड़ा जमीन घोटाला बताते हुए कहा कि ऐसे भूमाफिया उन्हीं जमीनों को निशाना बनाते हैं जिनका कोई वारिस नहीं होता। उन्होंने कहा कि योगी सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि ऐसी जमीनों को लेखपाल द्वारा चिन्हित कर ग्राम सभा में दर्ज कराया जाए, लेकिन यहां नियमों को दरकिनार कर खेल किया गया।

मामले के सामने आने के बाद स्थानीय प्रशासन पर भी सवाल उठने लगे हैं कि आखिर इतनी बड़ी हेराफेरी बिना मिलीभगत के कैसे संभव हो गई। शिकायत के बाद अब प्रशासनिक कार्रवाई पर सबकी नजरें टिकी हैं। वहीं,

अगर समय रहते इस मामले की निष्पक्ष जांच नहीं हुई तो यह मामला बड़े भू-माफिया नेटवर्क का पर्दाफाश कर सकता है।

इतिहास की सांसें थमीं, संरक्षण को तरसती खीरी की अद्भुत धरोहर

सिंगाही की भूलभुलैया

रियासत खैरीगढ़ की शान रही भूलभुलैया आज उपेक्षा की मार झेल रही है, पर्यटन दर्जा मिलने से लौट सकता है खोया वैभव

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश की धरती पर जहां एक ओर लखनऊ की भूलभुलैया अपनी स्थापत्य कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है, वहीं दूसरी ओर जनपद लखीमपुर खीरी के सुदूर क्षेत्र सिंगाही में स्थित ऐतिहासिक भूलभुलैया आज गुमनामी और उपेक्षा के अंधेरे में खोती जा रही है। कभी रियासत खैरीगढ़ स्टेट की समृद्धि और शिल्पकला का प्रतीक रही यह धरोहर अब संरक्षण के अभाव में धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खो रही है।करीब 80 किलोमीटर दूर स्थित नगर पंचायत सिंगाही में बनी यह भूलभुलैया न केवल वास्तुकला का अद्भुत नमूना है, बल्कि इतिहास और आध्यात्मिकता का भी अनूठा संगम प्रस्तुत करती है। इसका निर्माण सन् 1927 में खैरीगढ़ स्टेट की महारानी सुरथ कुमारी शाह ने अपने पति राजा इंद्र विक्रम शाह की स्मृति में कराया था। भूलभुलैया परिसर में स्थित शिव मंदिर में स्थापित नर्मदेश्वर महादेव इसकी धार्मिक गरिमा को और भी बढ़ाते हैं।

यह पूरा परिसर सरयू नदी के पावन तट पर प्राकृतिक सौंदर्य के बीच बसा हुआ है, जो इसे और भी विशेष बनाता है। भूलभुलैया की बनावट ऐसी है कि इसके चारों ओर बने समान आकार और ऊंचाई वाले द्वार एवं सीढ़ियां किसी भी व्यक्ति को भ्रमित कर देती हैं। यही विशेषता इसे 'भूलभुलैया' का स्वरूप देती है। यह संरचना केवल स्थापत्य कला का उदाहरण नहीं, बल्कि उस समय की सुरक्षा व्यवस्था और तंत्र साधना की परंपराओं को भी दर्शाती है। मंदिर का दक्षिणमुखी प्रवेशद्वार और तीनों प्रखंडों को जोड़ती सीढ़ियां इस बात का प्रमाण हैं कि इसे अत्यंत सोच-समझकर तैयार किया गया था। तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध यह स्थल कभी साधकों और श्रद्धालुओं का प्रमुख केंद्र हुआ करता था।

लेकिन समय के साथ यह ऐतिहासिक धरोहर उपेक्षा का शिकार हो गई। न तो इसका समुचित रखरखाव हो पाया और न ही इसे पर्यटन मानचित्र पर वह स्थान मिल सका, जिसकी यह हकदार है। परिणामस्वरूप आज यह स्थल जर्जरता और अनदेखी के कारण अपनी पहचान खोता जा रहा है। हालांकि, स्थानीय लोगों की पहल पर यहां तक पहुंचने वाले मार्ग में सुधार जरूर हुआ है। पहले जहां रास्ता पूरी तरह गड्ढों और कीचड़ से भरा रहता था, वहीं अब ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि अमनदीप सिंह के प्रयासों से लगभग 800 मीटर खड़ंजा मार्ग और पुलिया का निर्माण किया गया है, जिससे यहां पहुंचना अब अपेक्षाकृत आसान हो गया है।

क्षेत्रीय नागरिकों का मानना है कि यदि इस भूलभुलैया को पर्यटन स्थल का दर्जा मिल जाए और इसके संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएं, तो न केवल इसकी ऐतिहासिक पहचान पुनर्जीवित हो सकती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। आज जरूरत इस बात की है कि प्रशासन और पर्यटन विभाग इस अनमोल धरोहर की ओर ध्यान दे,

सिंगाही की भूलभुलैया का निर्माण 1927 में महारानी सुरथ कुमारी शाह ने कराया था

- यह धरोहर खैरीगढ़ स्टेट की राजधानी का महत्वपूर्ण हिस्सा रही
- भूलभुलैया में स्थित शिव मंदिर में नर्मदेश्वर महादेव की स्थापना
- संरचना में समान आकार के कई द्वार, जो भ्रम पैदा करते हैं
- तंत्र साधना के लिए भी प्रसिद्ध रहा यह स्थल
- वर्तमान में संरक्षण के अभाव में जर्जर होती स्थिति
- हाल ही में मार्ग निर्माण से पहुंच में सुधार
- पर्यटन स्थल का दर्जा मिलने से बढ़ सकते हैं रोजगार के अवसर

सतहरिया सीएचसी की बदहाल तस्वीर

मरीजों से ज्यादा 'बीमार' एम्बुलेंसों का हो रहा इलाज

- संसाधनों की कमी से जूझता अस्पताल बना रेफर सेंटर
- गंदगी और जर्जर एम्बुलेंसों के बीच इलाज को मजबूर मरीज

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

जौनपुर। सरकार भले ही जनस्वास्थ्य को लेकर गंभीरता के दावे करती हो और विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चला रही हो, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही कहानी बयां कर रही है। औद्योगिक क्षेत्र सतहरिया स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) इन दावों की पोल खोलता नजर आ रहा है। यहां मरीजों के इलाज से ज्यादा बदहाल एम्बुलेंसों की मौजूदगी चर्चा का विषय बनी हुई है।सीएचसी में अल्ट्रासाउंड जैसे जरूरी और आधुनिक उपकरणों का अभाव है, जिसके कारण मरीजों को मजबूरी में निजी जांच केंद्रों का रुख करना पड़ रहा है। इससे उनकी जेब पर अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जनप्रतिनिधि भी इस गंभीर समस्या पर चुप्पी साधे हुए हैं।स्थिति यह है कि अस्पताल अब उपचार केंद्र के बजाय रेफर सेंटर बनकर रह गया है। मामूली जांच और सुविधाएं भी उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश मरीजों को अन्य अस्पतालों के लिए भेज दिया जाता है। अस्पताल परिसर में गंदगी का अंबार लगा हुआ है, जिसके बीच मरीजों का इलाज किया जा रहा है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि यहां करीब 53 एम्बुलेंस लंबे समय से खराब हालत में खड़ी हैं। ये एम्बुलेंस न तो ठीक कराई जा रही हैं और न ही हटाई जा रही हैं, जिससे वे धीरे-धीरे कबाड़ में तब्दील होती जा रही हैं।एम्बुलेंस, जो आपातकाल में मरीजों की जान बचाने का सबसे अहम साधन होती हैं, वे खुद ही धूल, धूप और बारिश के बीच दम तोड़ती नजर आ रही हैं। शासन द्वारा इन एम्बुलेंसों पर लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं, लेकिन उनकी देखरेख के अभाव में यह निवेश बेकार साबित हो रहा है। इस अव्यवस्था के कारण अस्पताल परिसर की साफ-सफाई भी प्रभावित हो रही है, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ गया है। मरीजों और उनके परिजनों ने इस स्थिति पर नाराजगी जताते हुए जल्द सुधार की मांग की है। इस संबंध में सीएचसी अधीक्षक डॉ. राजेश कुमार ने बताया कि अन्य अस्पतालों से लाकर यहां एम्बुलेंस खड़ी कर दी गई हैं। इन्हें हटवाने के लिए उच्च अधिकारियों को अवगत करा दिया गया है। फिलहाल, सवाल यह है कि क्या जिम्मेदार विभाग समय रहते जागेगा या फिर यह स्वास्थ्य केंद्र यूं ही बदहाली की मार झेलता रहेगा।

प्रयागराज: न्यूरो सर्जन पर महिला ने लगाया छेड़खानी का आरोप

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

प्रयागराज। प्रयागराज के सिविल लाइंस थाना अंतर्गत न्यूरो सर्जन के खिलाफ एक महिला मरीज ने गलत नीयत से छूने और मर्यादा भंग करने की इरादे से वस्त्र उतरवाने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया है।

सिविल लाइंस थाना की पुलिस ने डॉक्टर कार्तिकेय शर्मा के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 74 (महिला की मर्यादा भंग करने के इरादे से हमला), धारा 76 (महिला को निर्वस्त्र होने को मजबूर करना) और धारा 127(2) (अवैध रूप से हिरासत में रखना) के तहत बृहस्पतिवार को प्राथमिकी दर्ज की।

पुलिस को दी शिकायत में महिला ने आरोप लगाया कि वह अपने भाई के साथ बुधवार की रात 10 बजे डॉक्टर के पास इलाज कराने आई थी। उसका

नंबर काफी बाद में आने वाला था, इसलिए उसका भाई घर चला गया था। महिला का आरोप है कि नंबर आने पर जब वह डॉक्टर के केबिन में गई तो डॉक्टर ने केबिन में मौजूद अन्य मरीजों को बाहर कर दिया और केबिन के दोनों दरवाजे बंद कर दिए और उसके ऊपर के कपड़े उतरवाकर उससे छेड़खानी की।

वहीं, डॉक्टर ने इन आरोपों पर कहा, महिला ने ये आरोप क्यों लगाए हैं मुझे नहीं पता क्योंकि वह पिछले तीन-चार महीने से मुझसे इलाज करा रही है।

तीन करोड़ का 'इलाज' या इलाज के नाम पर खेल? अलमारी से निकली फाइल ने खोली पोल

» सीएमओ ऑफिस में दवाओं-उपकरणों की खरीद पर बड़ा खेल, बिना सत्यापन भुगतान

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

अयोध्या। अयोध्या का स्वास्थ्य विभाग इलाज से ज्यादा 'हिसाब' में व्यस्त नजर आ रहा है। तीन करोड़ की दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की खरीद का मामला फिर से सुर्खियों में है–और इस बार कहानी और भी दिलचस्प है, क्योंकि फाइल सीधे अलमारी से निकलकर सीएमओ के टेबल तक पहुंची है।

सवाल सीधा है–जब सामान का भौतिक सत्यापन ही नहीं हुआ, तो भुगतान किस भरोसे कर दिया गया? या फिर भरोसा नहीं, 'बंद कमरों का समझौता' काम कर गया? सूत्र बताते हैं कि यह खेल पूर्व सीएमओ डॉ. सुशील कुमार के कार्यकाल में शुरू हुआ, जहां बिना खरीद की पुष्टि किए करोड़ों का भुगतान कर दिया गया। इस पूरे 'ऑपरेशन भुगतान' का मास्टरमाइंड उस समय का स्टोर इंचार्ज संत राम वर्मा बताया जा रहा है, जिसने कागजों

में सब कुछ दुरुस्त दिखाकर खजाना साफ कर दिया।मामला तब दब गया, जब फाइलें अलमारी में कैद कर दी गईं। लेकिन अब बलरामपुर सदर विधायक पल्टूराम के पत्र के बाद यह 'दबी आग' फिर भड़क उठी है। सीएमओ कार्यालय में हड़कंप है क्योंकि अब सवाल सिर्फ फाइल का नहीं, जिम्मेदारी का है। चौंकाने वाली बात यह है कि जिन अधिकारियों को जांच करनी थी, वही अब 'साक्ष्य मांगने' का खेल खेल रहे हैं। यानी पहले भुगतान, फिर जांच और अब सबूत की तलाश! अयोध्या का यह स्वास्थ्य घोटाला साफ बताता है कि यहां मरीजों की जिंदगी से ज्यादा कीमत 'फाइलों की सेटिंग' की है। अब देखना यह है–क्या यह मामला भी अलमारी में वापस बंद होगा, या इस बार सच की फाइल खुलकर ही रहेगी?

मौत पर पर्दा: डॉक्टर बचाओ अभियान में पुलिस-सीएमओ आमने-सामने!

महिला और नवजात की मौत के 24 घंटे बाद भी एफआईआर नहीं

» अस्पताल सील कर 'कर्तव्य' पूरा, जिम्मेदार अब भी बेखौफ

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। अयोध्या में इंसाफ अब फाइलों में नहीं, सेटिंग में लिखा जा रहा है। महिला और उसके नवजात की मौत ने पूरे सिस्टम की संवेदनहीनता को नंगा कर दिया है–जहां जिंदगी सस्ती और जिम्मेदारी महंगी हो चुकी है।

मां परमेश्वरी देवी मेमोरियल अस्पताल में हुई इस दर्दनाक घटना के 24 घंटे बीत गए, लेकिन पुलिस अब तक एफआईआर लिखने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। सवाल उठता है–क्या कानून अब डॉक्टरों की जेब में रखा जा रहा है? परिजनों का आरोप है कि डॉ. अंजली श्रीवास्तव ने खुद प्रसव कराने से किनारा किया और अप्रशिक्षित स्टाफ के भरोसे जिंदगी का सौदा कर दिया। नतीजा–मां और मासूम दोनों की मौत। लेकिन इसके बाद जो हुआ, वह और भी खौफनाक है। स्वास्थ्य विभाग ने अस्पताल को सील कर अपनी 'एक्टिविटी' दिखा दी, मानो ताला लगाने से ही न्याय हो जाएगा। लेकिन लाइसेंस रद्द नहीं, एफआईआर दर्ज नहीं–यानी कार्रवाई आधी, मंशा पूरी संदिग्ध। सीएमओ ऑफिस की चुप्पी और पुलिस की सुस्ती अब सवालों के घेरे में है।

क्या यह सिर्फ लापरवाही है या फिर किसी को बचाने की सुनियोजित कोशिश? सबसे बड़ा सवाल अगर एक मां और नवजात की मौत के बाद भी सिस्टम नहीं जागता, तो फिर कब जागेगा? अयोध्या में यह सिर्फ एक घटना नहीं, बल्कि उस सड़े हुए सिस्टम का आईना है, जहां 'डॉक्टर बचाओ' अभियान, 'न्याय' पर भारी पड़ रहा है।

नजूल भूमि पर अवैध प्लाटिंग पर गरजा बुलडोजर

» प्रशासन ने जारी की सख्त चेतावनी

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे के निर्देश पर फैजाबाद शहर के सुभाषनगर मोहल्ले में स्थित नजूल भूमि पर की जा रही अवैध प्लाटिंग को प्रशासन ने ध्वस्त कर भूमि को खाली करा लिया। यह भूमि राज्य सरकार की संपत्ति है, जिस पर कुछ लोगों द्वारा अवैध तरीके से प्लॉट काटकर बिक्री का प्रयास किया जा रहा था।

प्रशासन के अनुसार, संबंधित भूमि पूर्व में एक ट्रस्ट को पट्टे पर दी गई थी, जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी है और अब यह पूरी तरह से सरकारी स्वामित्व में है। कार्रवाई के दौरान अवैध निर्माण और प्लाटिंग को हटाकर भूमि को कब्जामुक्त कराया गया। प्रभारी अधिकारी नजूल ने स्पष्ट किया कि इस भूमि

से संबंधित किसी भी फर्जी दस्तावेज के आधार पर किया गया क्रय-विक्रय अमान्य माना जाएगा। साथ ही अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता के तहत कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

ज्वैलर्स लूट कांड का खुलासा 2 घंटे में दो की हुई गिरफ्तारी

एसपी ग्रामीण बलवंत चौधरी ने बताया एक महिला भी लूट में शामिल थी

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। एसपी ग्रामीण बलवंत चौधरी ने प्रेस वार्ता में रुदौली कस्बे में हुई ज्वैलर्स लूट की घटना का खुलासा करते हुए बताया कि पुलिस ने महज दो घंटे के भीतर महिला सहित दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। उनके कब्जे से करीब पांच लाख रुपये के लूटे गए आभूषण, मोटरसाइकिल, मोबाइल, बुर्का और खिलौना पिस्तौल बरामद की गई है।

उन्होंने बताया कि घटना कोठी बाजार स्थित आभूषण दुकान पर हुई, जहां महिला गहने खरीदने के बहाने पहुंची और मौका पाकर हार व चेन लेकर पिस्तौल जैसी वस्तु दिखाकर भाग निकली। बाहर खड़ा उसका साथी मोटरसाइकिल से उसे लेकर फरार हो गया। सीसीटीवी और पुलिस टीम की तत्परता से दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। अभियुक्तों की पहचान पायल कोरी और राहुल कुमार के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, दोनों योजनाबद्ध तरीके से इस प्रकार की वारदात को अंजाम देते थे। मामले में आगे की विधिक कार्रवाई जारी है।

भाजपा: एक चेहरा, कई कुर्सियां संगठन या निजी जागीर?

» कमलेश श्रीवास्तव के साये में मंडल अध्यक्षों की 'डुप्लीकेट राजनीति'

» बालकृष्ण वैश्य से विनोद-बिंदु तक सवालों के घेरे में

» स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

अयोध्या। अयोध्या में संगठन अब विचारधारा से नहीं, फ्यवस्था प्रबंधन से चल रहा है–और इस व्यवस्था के कथित शिल्पकार बने हैं महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव। एक व्यक्ति एक पद का नारा यहां पोस्टर तक सीमित है, जबकि हकीकत में वही पुराने चेहरे कई कुर्सियों पर विराजमान हैं।

महानगर उपाध्यक्ष बालकृष्ण वैश्य, कार्यसमिति सदस्य विनोद श्रीवास्तव, बिंदु सिंह और रमेश दास–ये नाम अब संगठन में कार्यकर्ता नहीं, बल्कि 'मल्टीपल एंट्री पास' बन चुके हैं।

महानगर से लेकर मंडल तक, हर सूची में इनकी मौजूदगी यह बताने के लिए काफी है कि अवसर नहीं, 'पहचान' चल रही है।मंडल अध्यक्षों की भूमिका भी कम संदिग्ध नहीं। सवाल यह है कि क्या ये अध्यक्ष खुद सूची बना रहे हैं या केवल हस्ताक्षर मशीन बनकर रह गए हैं? अंदरखाने चर्चा है कि कई मंडल अध्यक्षों ने दबाव में सूची पास की–जहां जमीनी कार्यकर्ता बाहर और 'करीबी चेहरे' अंदर कर दिए गए। संगठन के भीतर यह भी फुसफुसाहट है कि सक्रिय सदस्यता तक पूरी न करने वाले नामों को भी कार्यसमिति में जगह दी गई ताकि कोरम पूरा हो और 'ऊपर' खुश रहे। यह पूरा खेल साफ इशारा करता है संगठन अब कार्यकर्ताओं का नहीं, बल्कि 'कुर्सी क्लब' बनता जा रहा है।

सवाल सीधा है- जब एक ही चेहरा हर पद पर दिखेगा, तो नए कार्यकर्ता आखिर जाएंगे कहां? फिलहाल, असंतोष सुलग रहा है ज और अगर यही हाल रहा, तो यह चिंगारी जल्द ही संगठन को भीतर से जला सकती है।

होर्मुज में बारूद की गंध: ईरान अमेरिका टकराव खतरनाक मोड़ पर

❍ ए-10 विमान गिराने के दावे से बढ़ा वैश्विक संकट और बढ़ा ❍ तेल आपूर्ति, वैश्विक बाजार और भारत पर मंडराया असर

स्वराज इंडिया न्यूज डेस्क

नई दिल्ली। मध्य पूर्व में ईरान और अमेरिका के बीच चल रहा तनाव अब खुले सैन्य टकराव की दहलीज पर पहुंचता दिखाई दे रहा है। शुक्रवार को ईरान ने रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के पास अमेरिकी वायुसेना के ए-10 थंडरबोल्ट लड़ाकू विमान को मार गिराने का दावा किया है। यह घटना ऐसे समय में सामने आई है जब बीते एक सप्ताह में यह दूसरा बड़ा हमला बताया जा रहा है इससे पहले ईरान द्वारा अमेरिकी एफ-15 जेट को निशाना बनाने की खबर भी सामने आई थी।

अमेरिकी रक्षा सूत्रों के अनुसार, हमले के बाद ए-10 विमान का पायलट किसी तरह इजेक्ट होकर कुवैत के हवाई क्षेत्र तक पहुंचने में सफल रहा। बाद में उसे सुरक्षित निकाल लिया गया। विमान के मलबे के कुवैत सीमा में गिरने की बात कही जा रही है। हालांकि अमेरिकी प्रशासन ने अभी तक इस पूरे घटनाक्रम की आधिकारिक पुष्टि सीमित शब्दों में ही की है, लेकिन तनाव की गंभीरता को स्वीकार किया है। ईरानी सेना ने अंतरराष्ट्रीय मीडिया के जरिए इस हमले की जिम्मेदारी लेते हुए दावा किया कि यह कार्रवाई उनके हवाई क्षेत्र और समुद्री सुरक्षा की रक्षा के तहत की गई। ईरान के सैन्य अधिकारियों का कहना है कि अमेरिकी गतिविधियां लगातार उकसावे वाली रही हैं, जिनका जवाब देना जरूरी था।

स्थिति तब और ज्यादा गंभीर हो गई जब बचाव अभियान में जुटे अमेरिकी यूएच-60 ब्लैकहॉक हेलीकॉप्टरों पर भी कथित तौर पर हमला किया गया। अमेरिकी पक्ष के अनुसार, इस हमले में चालक दल को मामूली चोटें आईं, लेकिन सभी सुरक्षित हैं। यह संकेत देता है कि क्षेत्र में किसी भी प्रकार का सैन्य ऑपरेशन अब बेहद जोखिम भरा हो चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने इस घटनाक्रम पर पहली बार खुलकर प्रतिक्रिया देते हुए इसे 'युद्ध जैसी स्थिति' बताया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका अपने हितों और सैनिकों की सुरक्षा के लिए हर जरूरी कदम उठाएगा। वहीं पेंटागन ने क्षेत्र में अतिरिक्त सैन्य संसाधन तैनात करने के संकेत दिए हैं।

होर्मुज क्यों बना टकराव का केंद्र?

स्ट्रेट आफ होर्मूज विश्व का सबसे अहम समुद्री तेल मार्ग माना जाता है। वैश्विक तेल आपूर्ति का करीब 20 प्रतिशत हिस्सा इसी जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। ऐसे में यहां किसी भी प्रकार का सैन्य तनाव सीधे वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। पिछले कुछ दिनों में इस क्षेत्र में ड्रोन गतिविधियों, नौसैनिक गश्त और हवाई निगरानी में तेज़ी आई है। अमेरिका और उसके सहयोगी देश इसे 'सुरक्षा अभियान' बता रहे हैं, जबकि ईरान इसे अपनी संप्रभुता के खिलाफ मानता है।

क्या यह युद्ध की शुरुआत है?

मौजूदा घटनाक्रम सीधे युद्ध की घोषणा नहीं है, लेकिन संकेत बेहद गंभीर हैं। दोनों देशों की ओर से आक्रामक बयानबाजी और सैन्य गतिविधियां बढ़ रही हैं। यदि किसी बड़े पैमाने पर जवाबी हमला होता है, तो यह पूर्ण युद्ध में बदल सकता है। फिलहाल यह 'सीमित टकराव' की स्थिति है, जो कभी भी नियंत्रण से बाहर जा सकती है।

वैश्विक बाजार में हलचल, तेल की कीमतों में उछाल

लगातार बढ़ते सैन्य तनाव का असर अंतरराष्ट्रीय बाजार में साफ दिखाई देने लगा है। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई है और निवेशकों के बीच अनिश्चितता बढ़ी है। एशियाई और यूरोपीय बाजारों में भी गिरावट दर्ज की गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह तनाव लंबा खिंचता है तो तेल की कीमतें और बढ़ सकती हैं, जिससे महंगाई का दबाव बढ़ेगा। शिपिंग कंपनियों ने भी इस मार्ग से गुजरने वाले जहाजों के लिए जोखिम प्रीमियम बढ़ा दिया है।

भारत के लिए क्यों चिंता की बात?

भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा खाड़ी देशों से आयात करता है। ऐसे में होर्मुज में तनाव का सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। तेल महंगा होने से पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ सकते हैं, जिससे आम जनता और उद्योग दोनों प्रभावित होंगे। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, भारत स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और वैकल्पिक आपूर्ति मार्गों पर भी विचार किया जा रहा है। अभी तक निष्कर्ष यह है कि होर्मुज में बढ़ता तनाव सिर्फ क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक संकट का संकेत है। यदि समय रहते कूटनीतिक समाधान नहीं निकला, तो इसका असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर पड़ सकता है। फिलहाल दुनिया की नजरें ईरान और अमेरिका के अगले कदम पर टिकी हैं।

तेल राजनीति और रणनीतिक दबाव

होर्मुज सिर्फ समुद्री मार्ग नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन का केंद्र है। ईरान इस क्षेत्र पर अपनी पकड़ का इस्तेमाल दबाव बनाने के लिए करता रहा है। वहीं अमेरिका इसे खुला और सुरक्षित रखना चाहता है। यह संघर्ष सिर्फ सैन्य नहीं, बल्कि ऊर्जा और भू-राजनीतिक प्रभुत्व की लड़ाई भी है।

भारत के लिए रणनीतिक विकल्प

भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती ऊर्जा आपूर्ति को स्थिर रखना है। इसके लिए वैकल्पिक आपूर्ति स्रोत (रूस, अफ्रीका), सामरिक तेल भंडार का उपयोग, कूटनीतिक संतुलन बनाए रखना जैसे कदम अहम होंगे। भारत को इस संकट में तटस्थ रहते हुए अपने आर्थिक हितों की रक्षा करनी होगी।

- एक सप्ताह में दूसरा बड़ा सैन्य टकराव, स्थिति लगातार बिगड़ रही
- ए-10 विमान गिराने का ईरान का दावा, अमेरिका सतर्क
- बचाव हेलीकॉप्टरों पर भी हमला, ऑपरेशन जोखिम भरा
- होर्मुज में तनाव से वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित
- भारत समेत कई देशों की ऊर्जा सुरक्षा पर खतरा
- अमेरिका द्वारा सैन्य तैनाती बढ़ाने के संकेत

यूपी में नई पहल से बदलेगा भविष्य

आंगनबाड़ी से विश्वविद्यालय तक जुड़ा शिक्षा का सेतु

स्वराज इंडिया ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा को नई दिशा देने के लिए एक सराहनीय और दूरगामी पहल शुरू की गई है। अब प्रदेश के सभी विश्वविद्यालय अपने आसपास स्थित कम से कम छह-छह आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देश पर लागू की जा रही यह योजना न केवल शिक्षा व्यवस्था को जमीनी स्तर पर मजबूत करेगी, बल्कि विश्वविद्यालयों और समाज के बीच एक सशक्त जुड़ाव भी स्थापित करेगी।

इस पहल के तहत विश्वविद्यालयों की भूमिका सिर्फ मार्गदर्शन तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि वे आंगनबाड़ी केंद्रों की आधारभूत सुविधाओं, शिक्षण पद्धतियों और समग्र वातावरण को बेहतर बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाएंगे। सबसे खास बात यह है कि स्नातक और स्नातकोत्तर छात्र इन केंद्रों में इंटर्नशिप करेंगे। वे छोटे बच्चों को खेल-खेल में सीखने के नए तरीके अपनाकर पढ़ाएंगे, जिससे बच्चों में सीखने की रुचि बढ़ेगी।

- **हर विश्वविद्यालय छह केंद्रों को लेगा गोद, छात्रों की इंटर्नशिप व रिसर्च से मजबूत होगी प्री-प्राइमरी शिक्षा**
- **एनईपी के तहत 'स्कूल रेडीनेस' कार्यक्रम से बच्चों की नींव होगी और सशक्त**

वहीं, शोधार्थियों और पीएचडी छात्रों को भी इस पहल से जोड़ते हुए आंगनबाड़ी केंद्रों पर शोध कार्य कराया जाएगा। इससे न सिर्फ इन केंद्रों की वास्तविक समस्याओं की पहचान होगी, बल्कि उनके समाधान के लिए व्यवहारिक और प्रभावी मॉडल भी विकसित किए जा सकेंगे। इस तरह यह योजना शिक्षा, शोध और सामाजिक जिम्मेदारी का बेहतरीन संगम बनकर उभरेगी। इसके अलावा विश्वविद्यालयों द्वारा कम्युनिटी आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से स्वच्छता अभियान, स्वास्थ्य जांच शिविर, रक्तदान और पर्यावरण जागरूकता जैसे कार्य भी आंगनबाड़ी केंद्रों के आसपास आयोजित किए जाएंगे। इससे स्थानीय समुदाय की भागीदारी बढ़ेगी और सामाजिक विकास को भी गति मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत प्री-प्राइमरी शिक्षा को सुदृढ़ करने पर विशेष जोर दिया गया है। इसी दिशा में बेसिक शिक्षा विभाग 'स्कूल रेडीनेस' कार्यक्रम शुरू कर रहा है, जिसके तहत बच्चों को शुरुआती स्तर पर भाषा और अंक ज्ञान में दक्ष बनाया जाएगा। इससे बच्चों के लिए स्कूल में प्रवेश आसान होगा और उनकी शैक्षिक यात्रा मजबूत आधार पर शुरू होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल आंगनबाड़ी केंद्रों की गुणवत्ता में व्यापक सुधार लाएगी और ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की खाई को कम करने में मदद करेगी। कुल मिलाकर, यह कदम न केवल बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखेगा, बल्कि प्रदेश में शिक्षा के समग्र विकास की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **सपना देवी** द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। **संपादक: अनूप कुमार** **RNI No.:** UPHIN/2023/86769 ❍ **Email:** swarajindia2023@gmail.com ❍ Mob: 7800009853, ❍ **Website:** www.swarajindianews.com ❍ (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे) **प्रधान संपादक: पुरुषोत्तम द्विवेदी**

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें https://epaper.swarajindianews.com